भारत में राजनैतिक दल या दलदल

भारत में यूं तो सम्पूर्ण समाज के ही चरित्र में गिरावट आई है किन्तु सर्वाधिक चरित्र पतन भारतीय राजनीति में दिख रहे हैं। राजनैतिक दलों में अब चरित्र तो खोजने से भी नहीं मिलता। राजनैतिक दलों में चरित्र की बात करने वाले धीरे धीरे हाशिये पर ढ़केले जा रहे हैं। जोड़–तोड़ की राजनैतिक करने वाले अधिकांश लोगों ने तो अलग–अलग क्षेत्रीय दल बना लिये हैं। किन्तु भारतीय जनता पार्टी कांग्रेस और साम्यवादी ये तीन ऐसे राजनैतिक दल हैं जिन्होने अब तक चरित्र की राजनीति का मुखौटा पूरी तरह उतारकर नही फेंका है। अब भी इन दलों में चरित्र की चिन्ता करने वाले लोग हैं। जो तीना ही दलों में शीर्ष नेतृत्व में शामिल है। यद्यपि कांग्रेस और भाजपा में भी चरित्र की चिन्ता करने वाले शीर्ष पर होते हुए भी जोड़–तोड़ करन वालों से कई बार–समझौता करने को अभ्यस्त हो गये हैं। साम्यवादी दल ऐसे चरित्र संकट से अभी अछूता है अर्थात उसका सम्पूर्ण चरित्र ही जोड़–तोड़ पर आधारित है। किन्तु उसमें चरित्र का संकट नहीं। जो भी निर्णय है वह दल हित में सोचकर होता है।

हम कांग्रेस भाजपा संघ और साम्यवादियों के व्यक्तिगत चरित्र से ऊपर उठकर राजनैतिक चरित्र की चर्चा करें। देश में ग्यारह समस्याएँ बढ़ रही हैं जिनमें पांच चोरी–डकैती, बलात्कार, मिलावट, जालसाजी और हिंसा आतंक आपराधिक श्रेणी में मानी जाती है। शेष छः में से दो आर्थिक असमानता और श्रम में शोषण आर्थिक श्रेणी में दो साम्प्रदायिकता और जातिवाद सामाजिक बुराई की श्रेणी में तथा शेष दो भ्रष्टाचार और चरित्रपतन अनैतिकता की श्रेणी में शामिल है। कांग्रेस भाजपा संघ और साम्यवादियों में से किसी भी दल या समूह की प्राथमिकताओं में अपराध नियंत्रण शामिल नहीं है। सभी दल अपराध नियत्रण को एक सामान्य कार्य मानते हैं। अनैतिक कार्यो में शामिल भ्रष्टाचार और चरित्र पतन से भी किसी भी दल को कोई विशेष परहेज नहीं है। कांग्रेस और भाजपा को तो इन दानों स अब कोई विशेष परहेज बचा ही नहीं साम्यवादी और संघ क लोग अवश्य ही अब तक इनसे कुछ दूरी बनाकर रखने का प्रयास कर रहे हैं। यद्यपि इन दोनों की सर्वोच्च घोषित प्राथमिकताओं में ये दोनों समस्याएं नहीं रही। कांग्रेस पार्टी की आर्थिक और साम्प्रदायिक मामलों में अपनी एक पृथक पहचान है कि आर्थिक और सामाजिक मामलों में अधिकाधिक निजीकरण की समर्थक है और साम्प्रदायिक मामलो में अल्पसंख्यक तुष्टीकरण के पक्षधर संघ निजीकरण विरोध की दिशा में बढता हुआ दिख रहा है। भाजपा में अभी दो गुट हैं एक संघ परिवार का और दूसरा अटल जी समर्थक। सत्ता के मामले में भाजपा में अटल गुट मजबूत है और संगठन के मामले में संघ गुट अब भी हार नही माना है। यद्यपि धीरे धीरे कमजोर हो रहा है। भाजपा की आर्थिक नीतियों पूरी तरह निजीकरण समर्थक अथात कांग्रेस से मेल खाती है। साम्प्रदायिकता के मामल में भी भाजपा की नीतियां हिन्दू तुष्टीकरण के पक्ष में न होकर धर्म निरपेक्ष है। इस मामले में कांग्रेस और भाजपा की नीतियां एक समान है किन्तु कांग्रेस को राजनैतिक मजबूरो में अल्पसंख्यकों को खुश रखने के लिये अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की ओर झुकना पड़ता है और भाजपा को राजनैतिक मजबूरी वश हिन्दु तुष्टीकरण की और यदा कदा झुकना पडता हैं। यदि मजबूरी समाप्त हो जावे और संघ से पिण्ड छुडाकर कोई अन्य विकल्प मिल जावे तो भाजपा तत्काल अपना चोला उतार फेकेगी। कांग्रेस के बारे में अभी निश्चित तो नहीं कहा जा सकता परन्तु वह भो धीरे धीरे तुष्टीकरण की अपेक्षा धर्म निरपेक्षता की ओर सरकना शुरू कर सकती है।

यह स्पष्ट है कि साम्यवादी दल और कांग्रेस के बीच आर्थिक मामलों में कोई समानता नहीं है। अल्पसंख्यक तुष्टीकरण के मामले में दानों में कुछ हद तक समानता है भाजपा और संघ परिवार मे आर्थिक मामलों में समानता है न धर्म निरपेक्षता के मुददे पर। दोनों के बीच दोनों ही मददों पर पाताल की सीमा तक के मतभेद है। आर्थिक मामलो

में विशेषकर स्वदेशी के मुद्दे पर संघ परिवार और साम्यवादियों के विचार लगभग एकसमान हैं किन्तु साम्प्रदायिकता के मुद्दे पर दोनों के बीच तलवारे खिंची हुई है। ऐसी विकट स्थिति म भारत के राजनैतिक दल फंसे हैं कि इन राजनैतिक दलों ने भारतीय राजनीति में दलदल पैदा कर दिया है ये चारो दल उस दलदल में बुरी तरह फंस ह। ये दलदल से बाहर तो निकल नही सकते क्योंकि दलदल के अन्दर से एक दूसरे क हाथ पकडने के लिए तैयार नहीं और दलदल से बाहर खड हैं कइ राजनैतिक दल जिनका न आर्थिक सिद्धांत है न धार्मिक। सत्ता ही इन सबका सिद्धान्त है। इनमें मुलायम सिंह, मायावती, जयललिता, चन्द्रबाबू, रामबिलास पासवान, शरद पवार, करूणानिधि आदि प्रणीत सभी राजनीतिक दल शामिल है। ये सब लोग बाहर स

समर्थन का आश्वासन दे देकर ब्लैकमेल होते है और हमारे तीनों प्रमुख दल इन सबसे ब्लैकमेल होते रहते ह संघ तो अभी सत्ता के मैदान में पहचा ही नहीं है। भारतीय राजनीतिक का सैद्धान्तिक है कि वास्तविक समस्याएँ सुलझाने की पहल तो कभी हो ही नहीं सकती किन्तु आर्थिक समस्याओं और साम्प्रदायिकता का भी समाधान असंभव है। ब्याज के रूप में अनैतिक सिद्धान्तहीन लोगों के राजनैतिक धडों के नखरे झेलकर ब्लैक मेल भी होना पड रहा है किन्तु ये चारों ही है कि जरा भी बैठकर चर्चा करने के लिये तैयार नहीं। साम्यवादियों की तो अपनी विशिष्ट पहचान है। चाहे समाज और देश रहे या रसातल में चला जाय किन्तु ये अपनी नीतियों से कोई समझौता नही कर सकते। संघ परिवार भी बदल नहीं सकता क्योंकि धार्मिक मामलों में तो उसका अस्तित्व ही हिन्दु तुष्टीकरण पर टिका है, आर्थिक मामलों में भी धीरे धीरे उसने अपनी ऐसी सोच बना ली है कि वह मुडकर नही देख सकता। किन्तु कांग्रेस और भाजपा सैद्धान्तिक रूप से कोई कारण नहीं दिखता कि दोनों के बीच वैचारिक तालमेल न हो सके। यदि भाजपा संघ से किनारा कर ले और कांग्रेस साम्यवादियों से तो कांग्रेस और भाजपा में क्या अंतर रह जायेगा? ये दोनों मिलकर राजनीति को दलदल से निकाल कर संघ और साम्यवाद को दलदल में मरने के लिए छोड सकते ह। इस बुद्धिमानी के परिणाम स्वरूप बाहर में खड रह कर ब्लैकमेल करने वाले अनेक स्वयंभू राजनैतिक दलों कि

ब्लैकमेलिंग से भी पिण्ड छूट सकता है। पूरे देश में आर्थिक मामले में और धर्मनिरपेक्षता के मामले में भी अनिश्चिता का दौर खत्म हो जायेगा। ये दोनो मिलकर राजनैतिक अस्थिरता से पूरी तरह मुक्त होकर अन्य आपराधिक तथा अनैतिक समस्याओं पर भी ध्यान दे सकते ह।

भारतीय राजनीति के दलदल को भी ये दोनों दल जानते है और उसके दुष्परिणामों से भी पूर्णतः वाकिफ हैं किन्तु ये इससे निकल नहीं पा रहे। इसका मुख्य कारण है इनका अंहभाव और राजनैतिक महत्वाकांक्षा। अंहभाव और राजनीतिक महत्वाकांक्षा से मनमोहन सिंह जी तो अब तक निरपेक्ष है। सोनिया जी में अंहभाव तो नहीं किन्तु उक्त पद की पारिवारिक पृष्ठभूमि उन्हें राजनैतिक महत्वाकांक्षा से अलग नहीं होने देती, आडवानी जी में अंहभावना भी है और महत्वाकांक्षा भी किन्तु अटल जी इस उम्र में क्यों इस दलदल से निकलने की अपेक्षा वहीं मरना चाहते हैं यह पता नहीं। क्यों नहीं अटल जी एकाएक मनमोहन सिंह का निशर्त समर्थन घोषित करके भारतीय राजनीतिक के लिये अपने को अमर कर लेते हैं। यदि भाजपा और कांग्रेस एक होने से सारे भारत का राजनैतिक सामाजिक परिदृश्य बदल सकता है तो यह पुण्य कार्य शीघ्रातिशीघ्र क्यों नहीं सिर्फ इतना ही तो करना है कि भाजपा को संघ परिवार से पीछा छुडाकर आडवानो जी की महत्वाकांक्षा दबानी है और अटल जी को पद सन्यास की घोषणा करनी है। दूसरी ओर कांग्रेस को इसमें कुछ नहीं करना है क्योंकि ऐसा होते ही साम्यवादियों से उसके रिश्ते स्वयमेव समाप्त हो जायेंगे। मेरे विचार में तो यह सर्वोत्तम मार्ग है।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि ईश्वर अडवाणी जी की सोच बदले और अटल जी को पद मोह स दूर करेयिये देश की राजनीति दलदल से निकलकर स्वस्थ वातावरण में आगे बढ सके। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि यह सब होने वाला नही है और यह मेरा ख्यालीपुलाव है। मैं जनता हूँ कि ये राजनेता अपनी व्यक्तिगत राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं से समक्ष देश और समाज क रसातल में जाने तक को महत्व नहीं दते किन्तु मेरा मन आर्तनाद करने से नही माना और मैंने अपने विचार आप सब तक पहुंचा कर अपने मन को हल्का करना उचित समझा।

पत्रोत्तर

1 श्री सोमकान्त शर्मा H.I.G. 18 आदित्य नगर दुर्ग छत्तीसगढ

आपने चौबीस अप्रैल को दुर्ग गायत्री मंदिर में वर्तमान व्यवस्था पर गंभीर भाषण प्रस्तुत किया। आपने बताया कि वर्तमान व्यवस्था में हमारी भूमिका ऐसी है जैसे कि हम हिरासत में हो। वर्तमान व्यवस्था के लिय आपने Custodian शब्द का प्रयोग किया। क्या आपकी नजर में वर्तमान संविधान हमारा Custodian है? क्या हम उसकी हिरासत में है? दुनिया के सभी देशों में कोई न कोई संविधान होता है तो क्या सब देशो के लोग हिरासत में हैं?

आपने बताया कि पूरे देश में नैतिक मूल्यों में लगातार गिरावट और राजनीति ही दोषी है?

आपने यह भी बताया कि गरीबो को अधिक उपयोग की वस्तु पर डायरेक्ट टैक्स लगता है और अमोरों के अधिक उपयोग को वस्तु पर सब्सीडी देते है इसे थोडा और स्पष्ट करे।

उत्तर Custody शब्द के दो भावार्थ होते है। जब किसी अपराधी को Custody में रखा जाता है तो उसे हिरासत कहते ह जिसका अर्थ होता है उसके द्वारा जानबुझकर किये जाने वाले अपराध का नियंत्रण। जब किसी अच्छे आदमी को Custody में रखा जाता है तो उसे अभीरक्षा कहते ह जिसका अथ है उस व्यक्ति द्वारा स्वयं स या दूसरे से उत्पन्न खतरे से सुरक्षा। हिरासत का अर्थ है उस व्यक्ति से समाज की सुरक्षा और समाज को अभिरक्षा का अर्थ होता है उस व्यक्ति की स्वयं से या समाज से सुरक्षा। वैसे कुल मिलाकर दोनों का अर्थ एक ही है।

मैंने संविधान को कस्टोडियन नही कहा बल्कि संविधान के प्रावधानों के अन्तर्गत जो संसद बनाई जाती है उसकी भूमिका हमारी कस्टोडियन (अभिरक्षक) की है। संविधान ने आम नागरिकों के विशुद्ध पारिवारिक और स्थानीय मुद्दो पर भी निर्णय का अधिकार संसद का दे दिया किन्तु अपने ही चुने हुए सांसद को बीच में हटाने का अधिकार हमें नही दिया। यह संविधान का दोष है जिसे सुधरा जाना चाहिये। यदि संविधान में से संशोधन कर दें कि हम अपने चुने हुए प्रतिनिधि को वापस बुला सकते हैं तथा हमारे पारिवारिक तथा गांव संबंधी मामलों में संसद हस्तक्षेप नहीं कर सकती है तो संविधान के होते हुए भी हम राजनैतिक अभिरक्षा से स्वंतत्र हो जायेंगे। अतः संविधान दोष पूर्ण है कस्टोडियन नहीं।

पूरे देश मे नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही है। इस निरावट के लिए आम तौर पर हमें ही या समाज को ही दोषी कहने को एक परंपरा सी चल पडो है। हमारे लोग भी अपने को ही दोषी माने लेते है जबकि हमारा दोष सिर्फ यही है कि नैतिक मूल्यों में आई गिरावट के लिये हम अपने को दोषी मान रहे है। सच्चाई यह है कि सम्पूर्ण गिरावट के लिए एकमात्र दाषी है भारत की संवैधानिक व्यवस्था। संवैधानिक व्यवस्था की दोष पूर्ण नोतियाँ ही नैतिक पतन के लिए एक मात्र दोषी है कोई और नहीं यदि कोई व्यक्ति या व्यवस्था अपनी क्षमता से अधिक वजन उठाले और उठाते ही चली जावे तो परिणाम होगा अव्यवस्था। यदि व किसी के रोकने के बाद भी न माने तो दोषी कौन? किसने कहा समाज से कि तुम वैश्यावृति और गांजा रोकने का कानून बनाओ? कौन निवेदन करने गया था शासन के पास कि तुम बालश्रम रोको? दो चार ऐसे मूर्ख जो अपने को चरित्रवान और सारे भारत को चरित्रहीन मानते है या तो वे ऐसी मांग उठाते है या शासन के टुकडों पर पलने वाले तथाकथित समाज सेवी जो इस बहाने शासन के धन पर नजर गडाये रहते है। आम नागरिक तो भ्रष्टाचार, जालसाजी, मिलावट और आतंकवाद पर नियंत्रण चाहता है। शासन यह सब तो उसे दे नही पाता,

किन्तु उसके बदले में बाल विवाह, बालआश्रम, दहेज और जुआ नियंत्रण के कानून उसके गले में फंदा के रूप में और डाल देता है। आम आदमी बेचारा इसी वजन को गले में डाले घुमता रहता है। एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत की सम्पूर्ण पुलिस और न्यायालय पर भी अपने क्षमता से दस गुना अधिक बोझ लदा है। यह बोझ निरंतर बढ़ाया ही जा रहा है। क्षमता से कई गुना अधिक बोझ लदा होने के कारण इनकी कार्य क्षमता भी घट रही है। बताइये कि इसका दोषी कौन?

मैं मानता हूँ कि चरित्र समाज के विषय है शासन का नही। चरित्र निर्माण भी समाज को विषय है शासन का नही। फिर शासन चरित्र निर्माण के सामाजिक काम में क्यों पैर फंसाता है। जब यह उसका काम नहीं है और वह खाली भी नहीं ह तो उसे यह सारा सामाजिक काम समाज पर छोड देना चाहिए। आप विश्वास करिये कि जिस दिन नैतिकता में सुधार दिखना शुरू हो जायेगा। एक बार शासन को चाहिये कि वह सामाजिक कार्य समाज के जिम्मे छोडकर स्वयं को अपनी क्षमता के कार्य तक सीमित कर ले तो समाधान हो सकता है।

लगता है कि टेक्स संबंधी मेरे भाषण को सुनने में कहीं भुल हुई है। मैंने यह कहा था कि गरीबों के अधिक उपयोग को वस्तु पर (इन्डाइरेक्ट) अप्रत्यक्ष कर और अमीरो के अधिक उपयोग की वस्तु पर प्रत्यक्ष (डाइरेक्ट) कर लगता है। साईकिल पर यद्यपि ढाई सौ रूपये कर लगता है किन्तु अप्रत्यक्ष होने से उसे सामान्य लोग नहीं जानते। किन्तु रसोई गैस का मूल्य पांच सौ रूपये बढते ही देश भर में तूफान आ जाता है क्योंकि वह प्रत्यक्ष होता है। स्पष्ट है कि साईकिल का अधिकांश उपयोग निम्नमध्यम वर्ग करता है और रसोई गैस का अधिकांश उच्च मध्यम वर्ग। मेरे कथन को आप इस तरह पलटकर पढे तो उचित होगा।

2, श्रीमती आरती चकवर्ती, कोलकाता पश्चिम बंगाल,

ज्ञान तत्व अंक पचासी में मधुकर जी ने कैडर बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया है। मैं उनके इस प्रस्ताव को बहुत उचित मानता हूँ। आपने वैचारिक मंथन करते करते एक लम्बा समय बिता दिया है। अब कोई ठोस और निर्णायक कदम उठाने की आवश्यकता है। आपके पास सिर्फ एक सहायक के रूप अभिषेक जी का रहना पर्याप्त नहीं है। यह कार्य बहुत बडा है और समय कम है इसलिये इस योजना के कार्यान्वयन हेतु कुछ मेहनती देशवासियों की भिन्न भिन्न इकाईयाँ होनी चाहिये। इन इकाइयों का नामकरण आप लोग स्वराज्य मंच करें या कोई और। नाम से कोई फर्क नहीं पडता।

सदस्यों के चयन की प्रकिया और मापदण्ड आप तय करिये। व्यवस्था परिवर्तन के इस कार्य में देश हित की उत्प्रेरणा से प्रेरित लोगो को कमी नहीं रहेगी। आपको उनसे सिर्फ सतर्क रहना होगा जो देश प्रेम को व्यवसाय मान कर स्वयं को क्रान्तिकारी बनाने को होड में दिखते रहते है। इतना आप कर लेंगे, यह मुझे विश्वास है। ज्ञान तत्व कुछ प्रबुद्ध पाठको तक पहुच पाता है वह भी अत्यन्त सीमित मात्रा में। यह विचार उस ग्रास रूट जन सामान्य तक जाने को आवश्यकता है जो वास्तव में सभी समस्याओं के परिणामों का मूकदर्शक मक्त भोगी है। उस ग्रास रूट तक आपकी बात कैडर ही पहुचा सकेगा। आप पूरे देश में ऐसे कैडर निर्माण की प्रकिया प्रारभ करें तो परिणाम समयबद्ध और निश्चय प्राप्त होने की संभावना बन सकेगी।

उत्तर– मैं मधुकर जी के प्रस्ताव और आपकी टिप्पणी से पूरी तरह सहमत हूँ। तेरह अप्रैल को अपने सात आठ प्रमुख साथियों ने दिल्ली में बठकर इस मुद्द पर लम्बी चर्चा की। इसमें अब तक दो बाधाएँ रही (1) मेरा स्वभाव मैं एक विचारक हूँ। चिन्तन मेरा स्वभाव है। संगठन कर्ता के लिए आवश्यक समय और स्वभाव का मुझमें कुछ अभाव है। अपने कार्यकर्ता के साथ कैसे पारिवारिक संबध बने और ऐसे संबंध बनाने के लिए या औपचारिक व्यवहार कैसा हो यह समझदारी मुझमें पर्याप्त नहीं। (2) आर्थिक स्थिति मेरा परिवार एक छोटे से शहर रामानुजगंज में एक सामान्य व्यवसायी है। हम अपनी जमीन बेचते रहे और कोई आर्थिक कठिनाई नहीं हुई। शहर के कुछ लोग भी आत्मीयता और सहायता करते रहे। नगर पंचायत अध्यक्ष के रूप में भी पांच वर्षो तक खर्च करने की सुविधा थी। अब रामानुजगंज छूट गया है। परिस्थितियाँ बदल गई है। परिवार ने भी मेरे खर्च की मासिक सीमा बीस हजार तक तय कर दी है। मांगना मेरा सामान्य स्वभाव नहीं। यदि हम पूर्ण कालिक कार्यकर्ता रखते ह तो उनका यात्रा व्यय तो देना ही होगा यदि कार्यकर्ता स्वयं कमजोर आर्थिक स्थिति का है तो उसे कुछ पारिवारिक खर्च में परिस्थिति अनुसार सहायता करना पड सकतो है। ये दो कठिनाईयाँ हमारे समक्ष विचारार्थ रही। बहुत विचार मंथन के बाद तय किया गया कि,

1. लोक स्वराज्य मंच का पूरा कार्यालय दिल्ली आ जाय। मैं भी अपना कम से कम बीस दिन का समय दिल्ली कार्यालय में दूँ। अम्बिकापुर कार्यालय सहायक के रूप में काम करता रहे जहाँ मैं अधिकतम दस दिन दूँ।

2. मैं मुख्य रूप से विचार मंथन आर विचार प्रस्तुति करण का कार्य संभालू संगठन का मख्य दायित्व आर्य भूषण जी भारद्वाज कैलाश आदमी जी संभालेंगे। कैलाश जो मंच के महासचिव के नाते पूरे समय दिल्ली के कार्यालय को केन्द्र बनाकर पूरे भारत में संगठन निमित भ्रमण करगे। इस कार्य में अभी पुष्पेन्द चौहान जी भी सक्रिय है। जो अभी तो कुछ पारिवारिक कारणों से दिल्ली के आस पास संगठन का काम कर रहे है किन्तु एक जुलाई से वे राष्ट्रीय स्तर दौरा शुरू कर दगे।

3. अमरसिंह जी आर्य ने जयपुर को केन्द्र बनाकर चार पांच सौ किलामीटर के क्षेत्र में दौरा करके संगठन का काम शुरू किया है। बहादुर सिंह जी यादव पूरे जून माह में उ.प्र. के कुछ क्षेत्रों का दौरा करेंगे और जुलाई में फिर बैठकर आगे की सोचेगे। विदित हो कि वर्तमान में बहादुर सिंह तथा अमरसिंह जी

लोक स्वराज्य मंच के उपाध्यक्ष हैं दिल्ली कार्यालय के लिए आर्य भूषण जी भारद्वाज ने रचनात्मक कार्यकर्ता सदन वाला स्थान मंच के कार्यालय के लिए उपलब्ध कराया है।

4. ज्ञानयज्ञ मण्डल का मख्य कार्य है नई व्यवस्था के प्रारूप पर एक वैचारिक बहस छेडकर कुछ निष्कर्ष निकालने का प्रयास। इस वैचारिक बहस का मुख्य कर्ता धर्ता मैं हूँ। लोक स्वराज्य मंच का मुख्य कार्य है वर्तमान उच्चश्रृंखल राजनीति पर समाज का कोई न कोई अंकुश लगाने के निर्मित जनमत जागरण का आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार करना। यह कार्य लोक स्वराज्य मंच करेगा। दोनों ही कार्य एक दूसरे के पूरक है। आप सब लोग मिलकर दोनों ही दिशाओं में सक्रिय रहे। यह सबसे अपेक्षा की जाती है किन्तु सबके लिये यह अनिवार्यता नहीं है कि वे दोनों ही दिशाओं में सक्रिय हों।

5. आर्थिक समस्याओं के लिए यह विचार हुआ कि इस व्यय कि आपूर्ति के निर्मित अपने सभी शुभचिन्तकों को सूचित करें कि न्यनतम एक हजार रूपया वार्षिक दान देने वाले को ज्ञानयज्ञ मण्डल का संरक्षक सदस्य घोषित करें और ज्ञानयज्ञ मण्डल के संरक्षक सदस्यों के मार्गदर्शन, नियंत्रण और योजना के अन्तर्गत ही लोक स्वराज्य मंच के केन्द्रीय कार्यालय के खर्च की व्यवस्था हो। एक हजार रूपया से कम का दान सीधा लोक स्वराज्य मंच की विभिन्न इकाइयों को दिया जा सकता है।

अब तक इस तरह कि मोटी–मोटी रूप रेखा पर काम शुरू हुआ है। एक बात इस संबंध में स्पष्ट करनी आवश्यक है कि शासन के अधिकार दायित्व तथा हस्तक्षेप न्यूनतम हो यह लोक स्वराज्य मंच का वैचारिक उदघोषित है और राजनीति पर समाज का अंकुश तात्कालिक कार्य। इस एक विषय के अतिरिक्त अन्य सारे विषय बिल्कुल खुले है। ऐसे विषयों में आप लोक स्वराज्य मंच के कार्यकर्ता या पदाधिकारी होते हुए भी मेरे विचार का खुला विरोध कर सकते है। दहेज, आरक्षण, कृत्रिम ऊर्जा, श्रम शोषण, कर प्रणाली आदि अनेक विषयों पर लिखे गये मेरे लेख या टिप्पणियाँ के लिये या तो ज्ञानयज्ञ मण्डल उत्तरदायी है या मैं। लोक स्वराज्य मंच इसके लिये उत्तरदायी नहीं।

मैं बहन आरती जी को आश्वस्त करता हूँ कि अन्य चर्चा हेतु श्री कैलाश जी एक दो माह में आपसे मिलेगे और जो साथी पत्र से सूचित करेगे उन सबसे शीघ्र मिलने की केन्द्रीय कार्यालय द्वारा योजना बनाई जायेगी। आप अपना पत्र व्यवहार स्वराज्य मंच, बी–29, मंगलपांडे मार्ग, भजनपुरा दिल्ली–53 से कर सकते है। अम्बिकापुर और रामानुजगंज भी जो पत्र व्यवहार करेंगे वह भी हमें प्राप्त हो जाता है भले ही उसमें एक सप्ताह की देर होती हैं।

3. श्री जय किशन जी, धनबाद, झारखंड

केन्दोयकरण और विकेन्द्रीयकरण पर आपका लेख पढा। आपने तानाशाही और लोकतंत्र से जोडकर इसकी व्याख्या की जबकि केन्द्रोयकरण और विकेन्द्रोयकरण के गुण दोषों पर यह व्याख्या होनी चाहिए थी। हमारी दृष्टि बिल्कुल साफ होनी चाहिए कि वर्तमान व्यवस्था पूरी तरह लूट आधरित है। इस व्यवस्था से सेवा कार्य कराना मुश्किल है। जहां सीधी लडाई लडने हेतु कोई तैयार न हो वहा संवैधानिक लडाई दूर की बात है।

भारत में लूट आधारित राज्य पूंजीवाद चल रहा है। इसका उत्पादन आधारित पूंजीवाद से स्पष्ट विरोध है। आप जैसे विचारक भी ऐसे मामलों मे गाल मटोल लिखते है। इस संबंध में तालमेल कैसे बिठाये?

उत्तर– राज्य आधारित पूंजीवाद पूरी तरह लूटतंत्र है इस संबध में मैं स्पष्ट हूँ। मेरे विचार में सरकारी करण इस लूटतंत्र का मुख्य स्त्रोत है। सरकारीकरण और सेवा के बीच राज्य की भूमिका कुल मिलाकर वैसी ही है जैसे कोई डाकू राह चलते यात्रियों को लूटकर उसका अस्सी से नब्बे प्रतिशत तो जनसेवा में खर्च कर दे और शेष दस बीस प्रतिशत अपने ऐशो आराम पर। उक्त डाकू को स्थानीय लोग तो भगवान सरीखा मानना शुरू कर देते है। आज भारतीय शासन व्यवस्था पूरी तरह इसी मार्ग पर चल रही है। इस निष्कर्ष तक आप और मैं दानों ही एक मत है। आप इस लूट का समाधान व्यापारीकरण मानते हैं। मैं यह तो मानता हूँ कि व्यापारीकरण से राज्य का एकाधिकार खत्म होगा। उसकी लूट भी समाप्त होगी, भ्रष्टाचार भी नहीं रहेगा और राजनीति की अनेक बोमारियाँ द्र हो जायेंगी। किन्तु मेरे विचार में व्यापारोकरण से राज्य की बुराईयाँ दूर होने के बाद भी पूंजी की बुराईयाँ दूर नहीं होगी। आज राज्य या राजनैतिक दल पूंजी की बुराईयों का ही हवा खडा कर करके सरकारीकरण के पक्ष में हवा बनाते हैं जबकि पूंजो की बुराईयों को अपेक्षा राज्य को बुराईयां कई गुना अधिक है। इससे यह तो प्रमाणित नहीं हुआ कि पूंजी की व्यवस्था पूरी तरह निदाष है। यही कारण है कि मैंने समाजीकरण पर विकल्प के रूप में सोचना शुरू किया है जिसका अर्थ है कि यदि कोई कार्य स्थानीय इकाई सम्पन्न करना चाहे तो वह करे यदि न करना चाहे तो वह इकाई निजो हाथ में दे दें। मैं सरकारी करण के तो पूर्णतः विरूद्ध हूँ किन्तु समाजीकरण पर अभी स्पष्ट नहीं हूँ अतः सम्हल–सम्हल कर लिखता हूँ।

आपसे इस संबंध में चर्चा हुई थी आप मानते है कि वर्तमान राजनैतिक अर्थ तंत्र और उसका सेवा कार्य से लाभान्वित लोगों का एक गुट बन जाता है। यदि उक्त डाकू व्यस्तता वश या मानवता वश किसी यात्री को बिना लूटे ही छोड दे तो उक्त वर्ग को बहुत कष्ट होता है। भारत की आज को स्थिति बिल्कुल वैसी ही है। राज्य तंत्र की अथाह लूट का कुछ अंश लेकर अनेक सेवा भावी सगठन सक्रिय है। यदि राज्य किसी सरकारीकरण को समाप्त करके व्यापारीकरण या निजीकरण की दिशा में बढता है। तो उक्त सामाजिक कार्यो में संलग्न संस्थाओं और संगठनों को बहुत कष्ट होता है। मैं अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि आपकी सोच पूरी तरह ठीक हैं। ये संगठन राज्य को ऐसे निजीकरण या व्यापारीकरण के विरूद्ध आंदोलन करके उसे पुनः

सरकारीकरण के लिये प्रोत्साहित करते है। यह जाल बहुत बडा और व्यापक है। इन सब बातों स सहमत होते हुए भी मैं समाजीकरण अर्थात स्थानीयकरण को व्यापारीकरण या निजीकरण से भी अच्छा विकल्प समझता हूँ।

4. श्री अमरसिंह जी आर्य, एडवोकेट राजस्थान हाई कोट सी 12, महेश नगर 80 फीट रोड जयपुर

ज्ञान तत्व निरंतर पढता हूँ। आप निम्न प्रश्नों को और स्पष्ट करें –

क.– आपका कार्यक्रम धार्मिक है या सामाजिक या राजनैतिक ?

ख.– आप धर्म को राजनीतिक के साथ जोड कर देखते हैं या पृथक पृथक या दोनों की घालमेल करना चाहते है।

ग.–गांधीजी ने दाण्डी यात्रा द्वारा नमक बनाओ आंदोलन शुरू किया और अंग्रेजों को संदेश दिया कि मूल्य आवश्यकता की वस्तुओ पर शासकीय कर या नियंत्रण बर्दास्त नहीं किया जायेगा। आज के गांधीवादी दाण्डी यात्रा की नकल करके नमक या पानी पर टैक्स लगा रहे हैं। इतना नारट क्यों? आप नमक और पानी पर करारोपण या मूल्य वृद्धि के कितने पक्ष में हैं, कितने विरूद्ध?

घ.–अपने सर्वसेवा संघ के साथ मिलकर हस्ताक्षर अभियान चलाया था जो किसी कारण वश स्थगित हो गया अब भविष्य में भी योजना बनेगी और स्थगित होगी तो आगे क्या होगा?

ड.–वर्तमान संविधान के प्रारंभिक स्वरूप की कुछ अच्छी बातें भी अन्तिम प्रारूप बनाते समय निकाल दी गयी। जैसे प्रारंभिक स्वरूप में यह था कि राज्यपाल, चुनाव आयोग न्यायाधीश आदि की नियुक्ति के लिये पंद्रह लोगों की एक समिति होगी। अब भी आपके प्रस्तावित स्वरूप में से पुनः अच्छी बातें निकल गई तो क्या होगा?

उत्तर–व्यवस्था के चार अंग होते है (1) आध्यात्म (2) धर्म (3) समाज (4) राज्य। आध्यात्म व्यक्ति को स्वकेन्द्रित बनाता है। उसका समाज पर अच्छा या बुरा प्रभाव नहीं पडता। धर्म व्यक्ति को कर्त्तव्य की प्रेरणा देता है। इसका सामान्य काल में अच्छा और आपत्तिकाल में विपरीत प्रभाव होता है। समाज व्यक्ति को अनुशासित करता हैं। लोक–लाज, बदनामी, बहिष्कार आदि उसके माध्यम होते हैं। राज्य व्यक्ति को शासित करता है। दण्ड उसका माध्यम है।

जब कोई व्यक्ति धर्म का दुरूपयोग और समाज का अनुशासन मानना बन्द कर दे तभी राज्य को हस्तक्षेप करना चाहिए अन्यथा उस समाज से दूर रहना चाहिए। किन्तु सदा ही यह प्रवृत्ति रही है कि राज्य समाज को दबाकर स्वयं शक्तिशाली होना चाहता है या प्रयास करता है। समाज राज्य के ऐसे प्रयास को नियंत्रित करता है कि वह अपनी सीमा में रहे। किन्तु जब राज्य अपनी सीमाएं इस तरह तोडना शुरू कर देता है, तब धर्म अपना काम छोडकर समाज की रक्षा करने के लिए आगे आता है। धर्म का यह हस्तक्षेप अल्पकालिक तथा विशेष प्रयोजन तक के लिये होता है। प्रयोजन पूरा होते ही धर्म अपने क्षेत्र में वापस हो जाता है।

वर्तमान समय में राजनीति ने समाज व्यवस्था को या तो पंगु बना दिया है या नियंत्रित कर लिया है। सामाजिक अनुशासन रहा नही और राजनैतिक अपराधियों से साठगांठ के कारण अव्यवस्था में बदल चुका है। समाज पूरी तरह किंकर्त्तव्यविमूढ है। ऐसे कठिन समय में राज्य पर अंकुश लगाकर समाज को मजबूत बनाने का बीडा धर्म को उठाना है और मैं एक धर्म प्रधान व्यक्ति होने के कारण यह कार्य कर रहा हूँ। राजनीति से समाज की सुरक्षा के लिये यदि धर्म आगे आया है तो इस कार्य का धार्मिक भी कहां जा सकता है और सामाजिक भी। किन्तु यह कार्य राजनैतिक तो कतई नहीं है।

धर्म के दो रूप होते है (1) वैचारिक (2) संगठनात्मक। धर्म के वैचारिक स्वरूप का राजनीति से संबंध रखना समाज के लिये सदा ही हितकर रहा है किन्तु धर्म के संगठनात्मक स्वरूप का राजनीति से संबंध सदा ही समाज के लिये घातक रहा। हिन्दू धर्म का कभी संगठनात्मक स्वरूप नहीं रहा। बौद्ध धर्म ने जब भी राजनीति में कुछ हस्तक्षेप किया तभी परिणाम भंयकर हुए। इस्लाम का कभी वैचारिक स्वरूप रहा ही नहीं। इस्लाम के संगठनात्मक स्वरूप का राजनीति में हमेशा ही हस्तक्षेप रहा। परिणाम स्वरूप सामाजिक पतन होता गया। रही सही कसर संघ ने पूरी कर दी। संघ ने तो बकायदा धर्म के नाम पर अपना राजनैतिक दल ही बन लिया। धर्म का वैचारिक स्वरूप तो इस संगठनों के टकराव में ढाल बन गया है। जब भी धर्म के संगठनात्मक स्वरूप के राजनैतिक घालमेल की चर्चा होती है तो इस्लाम आर संघ परिवार अपना वैचारिक स्वरूप सामने खडा कर देते है और इस खतरे के हटते ही उनका साम्प्रदायिक चेहरा सामने आ जाता है। इस्लाम ने इसमें बहुत चालाकी की कि उसने राजनीति के एक अतिशक्तिशाली गुट कांग्रेस, वामपंथ, सर्वोदय तथा कुछ समाजवादियों को अपने पक्ष में खडा कर लिया। दूसरी ओर संघ अपने ना समझी के कारण अपनी अलग डफली अपनी अलग राग के चक्कर में अकेला पडता चला गया। धर्म के सागठनिक स्वरूप का राजनीति के साथ ऐसा तालमेल हुआ कि समाज त्राहि त्राहि कर उठा।

ऐसे समय में हम लोगो ने धर्म के सांगठनिक स्वरूप और राजनीति के इस अपवित्र गठबंधन को तोडने का बीडा उठाया है। अब तक इस्लाम, कांग्रेस, संघ और वामपंथी तो चुप है किन्तु साम्प्रदायिकता और राजनीति के गठजोड पर आक्रमण से सर्वोदय में कुछ हलचल हुई है। छत्तीसगढ सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष श्री हरि प्रसाद अग्रवाल ने तो बकायदा एक समाचार अखबारों में प्रकाशित कराकर हमारे प्रयास का मुसलमान, कांग्रेस और साम्यवाद विरोधी घोषित कर दिया है। उनके सम्पूर्ण फतवे में कहीं यह नहीं लिखा है कि मैंने क्या गलत कहा? सिर्फ फतवा मात्रा जारी करने से पता चलता है कि उनकी इस

संबंध में सोच क्या है? इस संबंध में और चर्चा अन्यत्र होगी। इस तरह आप स्वयं नतीजा निकाले कि मेरे प्रयास किस सीमा तक धर्म और राजनीति के घालमेल है और सीमा तक नहीं।

मैने या लोक स्वराज्य मंच ने सर्वसेवा संघ के साथ मिलकर कोई हस्ताक्षर अभियान नहीं चलाया। सर्वसेवा संघ ने त्रिसूत्रीय संविधान संशोधन अभियान को अपना मुख्य कार्यक्रम घोषित करके प्रथम चरण के रूप में पच्चीस लाख हस्ताक्षर कराने का संकल्प किया। यह अभियान तीस जनवरी से बारह फरवरी तक चलना था। सारा हस्ताक्षर अभियान सर्वसेवा संघ के बैनर तल तथा उसी के लेटर हेड पर होना था। पांच अक्टूबर को हमने अम्बिकापुर सम्मेलन में तय किया कि हम उक्त आंदोलन का पूरा समर्थन करेंगे तथा हस्ताक्षर भी करायेंगे। जनवरी पांच के प्रथम सप्ताह में दासपुर बंगाल सम्मेलन में सर्वसेवा संघ ने हम पर यह शर्त थोपनी चाही की हम गोविन्दाचार्य जी से कोई सम्पर्क न रखें। हम लोग ने सर्वसेवा संघ के उक्त हस्ताक्षर अभियान को निशत समर्थन दिया था। अतः वे हम पर कोई शर्त लादें यह संभव ही नहीं था। सर्व सेवा संघ ने उक्त शर्त न मानने कि स्थिति में हमें सर्वसेवा संघ के नेतृत्व वाले इस हस्ताक्षर अभियान से पृथक कर दिया। हमने तीस जनवरी से बारह फरवरी तक के हस्ताक्षर अभियान से स्वयं के पृथक कर लिया क्योंकि मैं गांधो को मानता हूँ और गांधी जी कार्य से दूरी बनाते थे, कर्ता से नही मैं सर्वसेवा संघ की गांधी विरोधी शर्त को कैसे स्वीकार करता जिसमें किसी व्यक्ति को अछ्त घोषित करके उससे किसी प्रकार के सम्पर्क की मनाही हो। इस तरह हस्ताक्षर अभियान से हमें जानबूझकर अलग किया गया और बाद में उनके हस्ताक्षर अभियान और बाद के प्रयासों का कितना परिणाम हुआ यह वे जाने। हम लोग त्रिसूत्रीय संविधान संशोधन अभियान के पने एजेन्डे पर काम रहे है। हमारे साथियों के प्रयत्नों से जो हस्ताक्षर हुए है वे हम सर्वसेवा संघ को देने के लिये तैयार हैं।

आपने लिखा है कि हमारे प्रस्ताविक संविधान से भी आगामी समीक्षा के प्रयत्नों के कुछ अच्छी बातें उसी तरह निकाली जा सकती है जैस स्वतंत्रता के समय अनेक अच्छी बातें निकाल दी गई थी। मैं आपके संदेह से सहमत हूँ किन्तु इसी डर से समीक्षा न कराई जावे? हम प्रयास करें कि अच्छी बात न निकले किन्तु यदि किसी मुद्दे पर हम अपनी बात सिद्ध नहीं कर सके तो उक्त संविधान समीक्षा के निष्कर्ष को ही अन्तिम और ठीक मानने के अलावा कोई रास्ता नहीं है।

5. आचार्य गुरूशरण जो, 68 सिन्धी कालोनी, ग्वालियर म.प्र. 479001

आपने ज्ञान तत्व अंक बान्नवे में गांधी, गांधीवाद और गांधीवादी शीर्षक लेख लिखकर एक कंकडी फेंकी है। अब देखना है कि प्रतिक्रिया स्वरूप कैसी हलचल होती है।

मैं मानता हूॅ कि हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक ही होना चाहिये। किन्तु यदि गंभीर बीमारी के नासूर बनने स शरीर में जहर फैल रहा हो तो उस बीमारी को भी रोकना ही होगा। आज ग्यारह समस्याएं समाज में जहर बनकर प्रत्येक क्षेत्र को प्रदूषित कर रही है इसलिये द्विपक्षीय दृष्टिकोण उचित ही है।

आपने आगरा आचाय कुल सम्मेलन में वर्धा आचार्य कुल सम्मेलन के परिणामो का जिस तरह जिक्र किया उसका मेरे मन पर गंभीर प्रभाव हुआ है। मैंने पूर्व में उक्त वर्ध सम्मेलन के इस पहलू पर इतना ध्यान नहीं दिया था। यद्यपि उक्त सम्मेलन म आये लोग में कई लोग आचाय कुल के विधिवत सदस्य नहीं थे किन्तु फिर भी उक्त सम्मेलन का महत्व बहुत था। मैं आपके उक्त विचार पर गंभीर हूँ।

उत्तर— मेरे विचार में विनोबा जी की सोच और क्रिया धर्म और सामाज के बीच की थी और जयप्रकाश जी की समाज और राजनीति के बीच। विनोबा जी राजनीति से स्वयं को दूर रखना चाहते हैं और जयप्रकाश जी धर्म से समाज के विषय में दोनों की पीडा समान थी यद्यपि पीडा की अनुभूति का प्रकटीकरण और इलाज के तरीके भिन्न हो सकते हैं।

इन्दिरा जी ने तो तानाशाही का ताण्डव नृत्य किया और आपात्काल लगाया उससे विनोबा जी को मर्मस्पर्शी पीडा हुई। उन्होने उक्त परिस्थितियों में आचार्य सम्मेलन कराकर एक बह्मास्त्र फेंका था। वह आचार्य सम्मेलन इन्दिरा जी के आपात्काल के लिये एक हाइड्रोजन बम के समान था और यदि उक्त प्रयास सफल हुआ होता तो उक्त घटना एक ऐतिहासिक स्वरूप ग्रहण कर लेती। उक्त आचार्य सम्मेलन से सम्पूर्ण भारत की राजनैतिक दशा और दिशा भिन्न हो जाती। यह हमारा दुर्भाग्य रहा कि उक्त आचार्य सम्मेलन के मारक प्रभाव को इन्दिरा की चालक नजरों ने पहले ही भांप कर उसे विफल कर दिया।

सन पचहत्तर में देश में कांग्रेस पार्टी से निराशा हुई थी, सम्पूर्ण राजनीति से नहीं। वर्तमान सामाजिक वातावरण में सम्पूर्ण राजनीति ही कटघरे में खडो है। परिस्थितियाँ उस समय से अधिक भयावह होते हुए अनुकूल है। पूरा समाज किसी चमत्कार की प्रतीक्षा कर रहा है। ऐसे अन्धकार समय में यदि आचार्यकुल अपने घिसे पिटे प्रस्ताव करने से उफ पर उठकर कुछ नया प्रयास कर सके तो बहुत अच्छा होगा। अभी देश भर के एक हजार आचार्यो को आमंत्रित करके सम्पूर्ण राजनैतिक परिदृश्य पर एक माह तक गंभीर विचार मंथन की आवश्यकता है। इस एक माह के विचार मंथन से एक ओर तो नई व्यवस्था रूपी अमृत का निर्माण होगा दूसरी ओर उससे उसे एक ऐसा सूक्ष्म वज्र भी बनेगा जो सम्पूर्ण राजनैतिक धमा चौकडो को ध्वस्त कर देगा। आवश्यक है समाज का मनोबल सुदृढ होने की। फिर भी सन सैंतालीस या पचहत्तर सरीखी एक ज्वाला इस आचार्य सम्मेलन के अन्त में निकल सकती हैं। इस सम्मेलन में कुछ बातें ध्यान देने की हो सकती है :—

1. यह सम्मेलन आचार्य सम्मेलन हो। आचार्य कुल सम्मेलन नहीं। आचार्यकुल इसका आयोजक मात्र है।

2. इस सम्मेलन में एक हजार से लेकर दो हजार तक विद्वानों को आमंत्रित करें। सभी स्थापित राजनीतिज्ञ, पूर्व राष्ट्रपति प्रधानमंत्री सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश धर्मिक विद्वान, व्यापारी, संस्थाओं के विचार कर सकते है चाहे उनकी विचारधारा कुछ भी क्यों न हो।

3. सम्मेलन डेढ दो वर्ष की तैयारी और प्रचार के बाद हो। तब तक सबसे स्वतंत्र विचार मंथन चलता रहे।

4. सम्मेलन न्यूनतम एक माह का तथा अधिकतम दो माह का हो।

5. ऐसे सम्मेलन के खर्च की चिन्ता आचार्यकुल न करे। खर्च की व्यवस्था अन्य लोग करें।

ये मेरे मोटे सुझाव ह। आशा है कि इन पर आप गंभीरता से सोचेगे। इस संबंध में योजना और चर्चा हेतु मैं उपलब्ध हूँ। आचार्य कुल की बैठक करके भी चर्चा हो सकती है।

6. विशेष उत्तर–

आदरणीय हर प्रसाद जी

समाचार पत्र में आपका मेरे विषय में विचार पढां। आपने लिखा संकीर्ण मानसिकता लिये हुए बजरंगलाल जी अग्रवाल ने रामानुजगंज में असामाजिक गतिविधियां को रोकने में जरूर सफलता पाई। पिछले दस वषा से वे सर्वोदय के नजदीक भी आये और सर्वोदय नेताओं ने उनक अच्छे इरादा का स्वागत किया। उनके कार्य अति अभिनन्दनीय रहे।

लेकिन उनके द्वारा प्रकाशित पत्रिका ज्ञानतत्व में जो लेख छप रहे है उन्हें पढकर तो ऐसा लग रहा है कि वे अपनी पुरानी लकीर पर कायम है। उग्र हिन्दुत्व का समर्थन मुस्लिम और ईसाईयों का अन्ध विरोध तथा वामपंथ और हर प्रगतिशोल कदम का विरोध यह दर्शाता है कि वे सर्वोदय में खप नहीं पायेंगें। गुजरात प्रकरण पर भी उन्हाने सर्वोदय का विरोध करत हुए मोदी का अप्रत्यक्ष समर्थन ही किया था। अभी चौबीस अप्रैल को उन्होने दुर्ग गायत्री मंदिर में लोक स्वराज्य मंच की गोष्ठी रखी थीं। उसमें अनेक सर्वोदय कार्यकर्ताओं के साथ मैं भी उपस्थित था। वहां उन्होने जो व्याख्यान दिया उसका अधिकांश हिस्सा अनर्गल प्रलाप के अलावा ख्याली पुलाव ही था मुझे तो ऐसा लगा कि बजरंगलाल जी सर्वोदय कार्यकर्ताओं को गुमराह कर रहे है। इन सब घटनाओं से मैने उन्हें सूचित कर दिया कि अब भविष्य में मैं आपके किसी कार्यक्रम में शामिल नहीं होऊँगा।

उत्तर– मेरा आपका सम्पर्क पिछले बीस वर्षो का है। हम दोनों बीस वर्षो से एक दूसरे के प्रशंसक भी रहे। मैं आपके त्याग और बलिदान का प्रशंसक रहा और आज भी हूँ। म सर्वोदय में आई निरंतर गिरावट का कारण उसकी वैचारिक जडता पूर्व में भी मानता रहा और आज भी मानता हूँ। मेरे विचार में बीस वषो में कोई परिर्वतन नहीं आया फिर भी आपकी धारणा एकाएक बदल गई क्योंकि मैने सर्वोदय पर एक लेख लिखते हए आप जैसे लोगों की सोच को गाधी जी के सोच क विपरीत बताया। उक्त लेख ने आपके त्याग, तपस्या और बुजुर्गियत के अहंकार को जगा दिया और आपने फतवा जारी कर दिया।

आप लोगों ने सर्वोदय के अधिकांश सामान्य में खुली वैचारिक चर्चा को समाप्त कर दिया है। सर्वोदय के अधिकाश सामान्य कार्यकर्ता धार्मिक कटटरवाद के भी विरूद्ध है और हिंसा के भी। आप लोगों ने धार्मिक कटटरवाद को हिन्दू कटटरवाद और हिंसा का अमेरिका प्रायोजित हिंसा कहना शुरू कर दिया। मैं बीस वर्षों से यही कहता और लिखता रहा हूँ कि साम्प्रदायिक और कटटरवाद के मामले में हिन्दुओं से मुसलमान रत्तीभर भी कम नहीं है। अतः साम्प्रदायिकता को हिन्दुओं से मुसलमान में बांटने की अपेक्षा साम्प्रदायिकता का विरोध और धर्म निरपेक्षता को मजबूर करने की आवश्यकता है। इसी तरह हिंसा के मामले में भी मैं अमेरिका हिंसा की अपेक्षा साम्यवादी हिंसा को रत्तीभर भी कमजोर नहीं मानता। हमें सब प्रकार की हिंसा का विरोध करना चाहिये चाहे वह अमेरिकन हिंसा हो या वामपंथी। मने दुर्ग की बैठक में अपने भाषण में यह सुझाव दिया था कि भारत को स्वतंत्रता पश्चात की सम्पूर्ण राजनैतिक सामाजिक कार्यप्रणाली हमें ग्यारह समस्याओं के मामले में बहुत पीछे ले जा रही है इसी तरह सर्वोदय भी लगातार समाज में अपनी भूमिका खो रहा है। हमें गंभीरता पूर्वक एक वैचारिक बहस शुरू करनी चाहिए कि कहीं हमारी सोच और हमारी नीतियों में तो परिर्वतन की आवश्यकता नहीं है।

मैने अपने भाषण में भाजपा, संघ, कांग्रेस और साम्यवादी पार्टियो की आलोचना भी की थीं। मेरे पूरे भाषण का टेप सुरक्षित है। मैंने अपने भाषण में कोई ऐसी बात नही कही जो पूर्ण में आपके समक्ष न कही हो। मैंने गुजरात के घटनाक्रम में प्रारंभ से आज तक मोदी का विराध किया किन्तु साथ ही मैने गुजरात चुनावों में सर्वोदय के चुनाव प्रचार का विरोध किया था और आज भी करता हूँ। बीस वषा से मेरे विचारो में परिर्वतन नहीं आया। आपकी स्थिति में अवश्य परिर्वतन आया है क्योकि अब आप कांग्रेस पार्टी के विधिवत सदस्य बन गये है और आपने छः माह पूर्व सम्पन्न चुनावों में टिकट के जिये भरपूर प्रयास किया था नई स्थिति में आपको कांग्रेस की आलोचना बुरी लगी तो उसे सैद्धान्तिक रूप देना उचित नहीं।

मैं मानता हूँ कि सर्वोदय के अधिकांश कार्यकर्ता राष्ट्र और सर्वोदय की कार्यप्रणाली पर बहस के इच्छुक हैं किन्तु कुण्डली मारकर बैठे आप लोग ऐसी बहस से कतराते हैं। यदि आप में हिम्मत है तो एक बार छत्तीसगढ सर्वोदय सम्मेलन बुलाकर उसमें साम्प्रदायिकता और हिंसा पर खुली चर्चा आयोजित करें। मैं भी उसमें रहूँगा। यदि आम कार्यकर्ता ने यह कह दिया कि मुसलमान हिन्दुओं से कम कटटर कम साम्प्रदायिक होते हैं तथा वामपंथी साम्यवादी अमेरिका ब्रिटेन से कम हिंसक प्रवृति के है तो अपनो सोच में फेर बदल कर लूंगा और मैं तो इस मत का भी हूँ कि इस मुददे पर केन्द्र पर भी बहस होनी चाहिए और जो निर्णय होगा वह मुझे मान्य है किन्तु मुझे यह नही मान्य नही कि हमारे बुजुर्ग कभी कांग्रेस के सदस्य बनकर तो कभी साम्यवादियों की मीठो बातों में फंसकर और हिसा की परिभाषाएँ बदलते रहें।

मैंने नोतिगत जडता के विरूद्ध आवाज उठाई है। नीतिगत चर्चाए फतवे जारी करके नहीं विचार मंथन से ही किसी नतीजे तक पहुँच सकती है। मैंने बहुत सोच विचार करके ही विचार मंथन की आवश्यकता पर आवाज बुलन्द की है। मैं सर्वादय का कोई पदाधिकारी नहीं को मुझे पद छिनने का डर हो। मुझे खुशी है कि मेरी सोच के अनुसार ही आप लोगो में कुछ खलबली है और आशा ह कि भविष्य में कोई अच्छा परिणाम निकल सकेगा। इस समय भारत को साम्प्रदायिकता और आतंकवाद के विरूद्ध कठिन संघर्ष करना है। आप जैसे लोगों का नेतृत्व सर्वोदय परिवार की इस संघर्ष मे भूमिका को दिग्भ्रमित कर रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप कुछ समय में ही सच्चाई को समझेगे। आपका इस्लाम और वामपंथ से मोह भंग होगा और तब आपको वास्तविक गांधी दिखने लगेंगे।

7. डॉ रामसेवक जी शुक 221—269 सी तुलाराम बाग इलाहाबाद उत्तर प्रदेश

ज्ञान तत्व अंक इक्यान्नवे में आपका गंभीर आलेख पूंजीवाद साम्यवाद और श्रमवाद पढा। आपका आलेख मनन करने योग्य तो है ही साथ हो तदनुसार कर्म करने योग्य भी है। आज देश की अधिकांश समस्याओं का समाधान श्रम सम्मान में निहित है। यह सच्चाई आप अच्छी तरह जानते हैं और मानते भी है। यह एक मात्र ऐसा सूत्र है जो भारत की सभी समस्याओं का सर्वाधिक महत्वपूर्ण समाधान होते हुए भी आप अन्य अनेक कार्यो में सक्रिय है। इससे आपकी सक्रियता भी घटती है कि आप अन्य प्रयासों को तत्काल बन्द करके श्रम सम्मान का एक सूत्रीय कार्य हाथ में ले लें। इस प्रयास से साम्यवादियों तथा नकली धर्म निरपेक्षों के पाखंड पर आसानी से रोक लग सकती है।

उत्तर — भारत में समस्याएँ तीन प्रकार की है 1.प्रशासनिक, 2.सामाजिक, 3.आर्थिक। प्रशासनिक समस्याएं पांच ह क. चोरी, डकैती, लूट ख. मिलावट ग. बलात्कार, घ. जालसाजी, ड. आतंक और हिंसा। इस पांचो का समाधान मुख्य रूप से तो प्रशासनिक ही है। इनका समाधान सामाजिक और आर्थिक रूप से आंशिक ही हो सकता है। शासन ने इन समस्याओं के आर्थिक या सामाजिक समाधान खोजने की गलत पहल की। हमें इन समस्याओं के आर्थिक सामाजिक समाधान खोजने की पहल से बचना चाहिये। 2. सामाजिक समस्याओं में वैसे तो बहुत लम्बी सूची है किन्तु मुख्य रूप से चरित्र पतन, साम्प्रदायिकता, जातिवाद और भ्रष्टाचार है। ये चारों समस्याएं भी बहुत बडो है। इन समस्याओं का न प्रशासनिक समाधान संभव है और इनका समाधान भी सिर्फ सामाजिक हैं। 3. आर्थिक समस्याएँ भी अनेक है। जैसे बेरोजगारी, आर्थिक असमानता आदि। इनका समाधान न प्रशासनिक है न ही सामाजिक। ये समस्याएँ विशुद्ध आर्थिक है और आर्थिक नीतियों में बदलाव से ही सुलझेंगी।

यद्यपि तीनों प्रकार की समस्याओं का प्रभाव भिन्न भिन्न है किन्तु श्रम सम्मान वृद्धि आर्थिक समस्याओं पर निर्णय और शेष पर आंशिक प्रभाव अवश्य पड़ेगा। मैं आपकी भावनाओं से सहमत हूँ। हमें श्रम समान और श्रम मूल्य वृद्धि पर ध्यान देना चाहिये था। हमने इस दिशा में कोई प्रयत्न तो किया ही नहीं उल्टा नई नई तरकीब से श्रम शोषण के मार्ग और खोल दिये। पूंजीवादियों ने श्रम शोषण के प्रत्यक्ष मार्गो का सहारा लिया। पूंजीपतियों ने श्रम शोषण के मार्गो को लोकतंत्र में फिर कर लिया। द्सरी ओर बुद्धिजीवियों ने श्रमशोषण के गुप्त मार्ग अपनाये। इन्होंने श्रम शोषण के इन मार्गो को साम्यवाद में फिट कर दिया। साम्यवाद और वामपंथ की प्रत्येक आर्थिक नीति पूरो तरह श्रमशोषण और बुद्धिजीवियों के पक्ष में ही बनती है। सबसे मुख्य बात यह है कि साम्यवाद की पूरी पूरी अर्थनीति श्रमजीवियों के नाम पर बनाई जाती है। मैं सारी स्थिति को समझ रहा हूँ। मैंने जबसे श्रम शोषण के इन दोनों प्रकार के षडयंत्र पर प्रहार शुरू किया है तबसे किसी भी वामंपथी पाठक के कोइ प्रतिकिया व्यक्त नहीं की। उन्हे ऐसी उम्मीद नहीं थी कि उनकी इस प्रकार पाल खोली जायेगी। इस तरह धीरे धीरे हम इस दिशा में गए रहें है। गति धीमी है किन्त् ठीक दिशा में है। मेरी इच्छा है कि हम आप जैसे साथी मिलकर एक एक सा अभियान छेंड़ कि साम्प्रदायिक श्रमशोषण तथा छदम हितैषियों की पूरी की पूरी पोल खोली जा सके। ऐसे किसी अभियान में मेरी पूरी सहभागिता रहेगी। हम सब मिलकर इस संबंध में योजना बनावे कि यह कैसे किया जा सकता है।

8. श्री महावीर सिंह पूर्व पुलिस उप अधोक्षक फैजपुर निनानन, बागपत उत्तर प्रदेश,

ज्ञानतत्व अंक नवासी पढा। मैं आर्य समाज, सर्वोदय तथा आजादी बचाओ आंदोलन से जुडा हूँ। आपने अंक नवासी में चार प्रश्न किये हैं प्रश्न संख्या तीन से मेरी पूर्ण सहमति हैं प्रश्न संख्या एक दो तीन से मेरी पूर्ण सहमति है। प्रश्न संख्या एक दो चार पर मेरे कुछ भिन्न विचार है।

1. अब कोई भारतीय कंपनी घाषित रूप से शीतल पेय नहीं बनाती है यदि बनती भी है तो डंके कि चोट पर उसे मानक अनुसार शुघोषित नहीं करती। पेप्सी, कोकोकोला अपने अपने शीतल पेय मानक अनुसार शुद्ध घोषित करती है। जबकि उनका स्तर उस योग्य नही। उनका निम्न स्तरीय होना पूरी तरह प्रमाणित हा चुका है।

2. स्वदेशी आंदोलन लोक स्वराज्य की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। आपने जिन ग्यारह समस्याओं का जिक्र किया है वे सब की सब भारत में फैली राजनैतिक संवैधानिक अव्यवस्था के परिणाम है। ये सारी समस्याएं स्वदेशी आंदोलन के अभाव और हमारी निष्क्रियता के कारण बढ रही है आप जैसे विचारकां की सहभागिता की नितान्त आवश्यकता है।

3. मैं आपके प्रश्न और सुझाव से पूरी तरह सहमत हूँ।

4. आपने स्वदेशी आंदोलन की भावनात्मक या तर्कसंगत स्थिति जाननी चाही है।

परिविशिष्ठ बुद्धि ही भावना होती है। अंग्रेजी के Emotion शब्द से भावना का अर्थ नहीं निकलता। बिना सोचे समझे अतार्किक कार्य भावना नही है। स्वदेशी विचार का आधार श्रम आधारित शोषण मुक्त, समता मुल्क समाज की स्थापना है। गांधी जी के शब्दो में स्वदेशी और स्वराज्य एक दूसरे क पूरक ह।

उत्तर– मै शीतल पेय मे कोकोकोला या पेप्सी का जीवन में उपयोग नहीं किया हूँ। मैं स्वदेशी के संबंध में आपके विचार और भावना से सहमत हूँ। भावना और विचार के संबंध में मेरे निष्कर्ष कुछ भिन्न है। मैं भावना को सस्कार से अधिक प्रभावित मानता हूँ। जो प्रचार से अधिक प्रभावित होती है। भावना का स्थान है हृदय, परिणाम है सक्रियता और दुष्परिणाम है निष्कर्ष का अभाव। विचार का स्थान है। मस्तिष्क परिणाम है। निष्कर्ष और दुष्परिणाम है निष्क्रियता। बिरले ही व्यक्तियों म चिन्तन और सक्रियता एक साथ होते हो। इसीलिये चिन्तन और सक्रियता के समन्वय पर अधिक जोर जाता है जिसमें दोनों को मिलकर आगे बढना चाहिये।

मैं आपके स्वदेशी संबंधी सम्पूर्ण विचार से सहमत हूँ। स्वदेशी आंदोलन लोक स्वराज्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है यह ठीक है। मेरा सुझाव तो सिर्फ यह है कि हम स्वदेशी पेय के साथ साथ स्वदशी संविधान, स्वदेशी व्यवस्था, आदि की दिशा में भी बढ तो अधिक अच्छे परिणाम निकल सकते है हमें समुद्र पर पुल बनाकर लंका जाना है। यदि हमारी नल नील की क्षमता हो तो हमें बालु के कण डालकर गिलहरी बनने से बचना चाहिये। हम अपनी क्षमता को स्वय तौले को हम स्वदेशी संविधान, स्वदेशी शासन व्यवस्था, स्वदेशी समाज व्यवस्था, और स्वदेशी वस्त्र खानपान आदि की व्यवस्था में किस कार्य में किस सीमा तक लग सकते हैं। कार्य सभी ठीक है और अपनी क्षमतानुसार सब काम करने ही है। मैंने अपनी क्षमता का आकलन करके ही वजन उठाया है।

मुझे सबसे अधिक कठिनाई होती है जब हमारे पाठक पढकर चुप रह जाते ह। आपने लिखकर आगे चिन्तन मनन में सहायता की है ऐसी ही आपसे अपेक्षा भी थी। मेरी तो इच्छा है कि आप और सक्रिय होकर आगे बढें तो मिल जुलकर कुछ निर्णायक कदम उठाया जावे।

9. मु. वसीम, ओखला, नई दिल्ली–25

ज्ञानतत्व बराबर मिलता है। शुल्क कितना भेजना है लिखियेगा। मुझे जानकारी और याद न होने से कठिनाई है।

10. श्री जसवन्तराय जी, इन्दौर मध्यप्रदेश

ज्ञानतत्व का वार्षिक शुल्क संभवत समाप्त हो गया होगा। एक सौ रूपया भेज रहा हूँ। मेरी आपको सलाह है कि ज्ञानतत्व का शुल्क समाप्त होते ही सूचना देने की प्रणाली विकसित करें जिससे पाठकों को भी सुविधा हो और आपको भी।

उत्तर– ज्ञानतत्व एक वैचारिक पत्रिका है साहित्यिक या व्यावसायिक नहीं हमारी एक सी सोच है कि ज्ञानतत्व पढना भी एक प्रकार स शुल्क से कम महत्वपूर्ण नहीं है। जो लोग ज्ञानतत्व पढते है वे स्वयं जिम्मेदार लोग हैं और पत्रिका को अपनी ही पत्रिका मानते है। ऐसी स्थिति में यदि पचास रूपये कम शुल्क आ गया तो मुझे कोई दिक्क्त नही और अधिक आ गया तो आपकी कोई दिक्कत नहीं ज्ञानतत्व के शुल्क का इतना लम्बा चौडा आर्थिक हिसाब रखना। आवश्यक प्रतीत नहीं होता है इसलिये हम विधिवत शुल्क की सूचना नहीं देते। हम तो समझते हैं कि अपनी अपनी क्षमता अनुसार सब अपनी अपनी जिम्मेदारी वहन करते है और करेंगे। ज्ञान तत्व को कई लोगों का अतिरिक्त सहयोग भी मिलते रहने से अभी ऐसी स्थिति नहीं है कि आर्थिक पक्ष की विशेष चिन्ता की जाये। आप सबसे मेरा पुनः निवेदन है कि अच्छे पाठकों के नाम भेजकर उन्हें ज्ञानतत्व का पाठक बनने हेतु प्रेरित करें चाहे सशुल्क हो या निशुल्क।

11. श्री मुरारीलाल जी अग्रवाल, सतयुग की वापसी, 24 मधुवन, अलवर, राजस्थान –301001

ज्ञानतत्व बराबर पढता हूँ। मैं आपसे अधिकांश मुददों पर सहमत हूँ संविधान संशोधन के लिये वातावरण बनाने की आवश्यकता है। जनप्रतिनिधियों के लिये शैक्षिक और चारित्रिक योग्यता होनी चाहिये यह देश का दुर्भाग्य था कि वह एक शराबी मांसाहारी व्यक्ति देश का प्रधानमंत्री बनते तो देश बहुत मजबूत होता दुनिया मे सख शान्ति अच्छे लोग ही ला सकते है। अतः शराब मांस व्याभिचार अंधविश्वास, पाखंड आदि दुष्प्रवृतियों के विरूद्ध अभियान चलाने की आवश्यकता है।

उत्तर– आपने जो कुछ लिखा है समाज म आमतौर पर वैसा ही माना जाता है। मांसाहार शराब और वैश्यावृति का चरित्र पर प्रभाव पडता है यह बात सच होते हुए भी आंशिक सच ही है। मेरे शहर के दो अत्यन्त प्रभावशाली लोग शहर के सभी गुण्डों के अगुआ रहते ह किन्तु दोनों ही मांस और शराब से

बिल्कुल दूर रहते है। अधिकांश सफल धूर्त षडयंत्रकारी मांस शराब व्यभिचार से दूर रहते है क्योंकि षडयंत्र और धूर्तता के लिये तीक्ष्ण बुद्धि की आवश्यकता है और मांस शराब व्यभिचार का विरोध अच्छे समाज निर्माण में महत्वपूर्ण है किन्तु व्यवस्था परिवर्तन में इनका आंशिक ही योगदान होगा।

स्वाधीन भारत के प्रधानमंत्री बनने हेतु उस समय न सुभाष बाबू जीवित थे न वीर सावरकर। अतः इस तुलना से अभी कोई लाभ नही हमें तो समस्या के मूल में जाकर समाधान खोजना है। जनप्रतिनिधियों की शैक्षणिक योग्यता कोई निर्णायक परिवर्तन कर सकेगी यह भी संदेहास्पद ही है। भारत में यदि सर्वे करें तो शिक्षित जनप्रतिनिधि अशिक्षित जनप्रतिनिधियों की अपेक्षा अधिक शोषण और अत्याचारी सिद्ध हुए ह। अतः हवा में बात करने से लाभ नहां होगा। अभी मूल समस्या यह है कि भारत में तीन तरह के लोग है।

1. शरीफ जो ठगे जाते ह ठग नहीं सकते, देना जानते है। लेना नहीं कर्त्तव्य करना जानते है अधिकारो की चिन्ता नहीं करते। 2. धूर्त जो ठग लेते ह ठगे नहीं जाते, लेना जानते है देना नही, अधिकारों के लिये संघर्ष करते है कर्त्तव्य करते ही नहीं तीसरे वे लोग जो दुहरा आचरण करते है ये कमजोर को ठगते है। मजबूत से ठगे जाते है। कमजोरों से लेना जानते है और मजबूतों को देते है कमजोरों के सामने अधिकार दिखाते है और धूतों के सामने कर्त्तव्य करते है। ये बीच वाले शरीफ और धूर्त के बीच दुहरा जीवन जीते है। ये तीनों स्थितियों गलत है आदर्श स्थिति चौथी है जिसमें मनुष्य न किसी को ठगे न ठगा जाय।

एक अनमान के अनुसार धर्म के मानने वालों में पहले प्रकार के लोग अस्सी प्रतिशत, दूसरे प्रकार के पांच प्रतिशत और तीसरे प्रकार के पंदह प्रतिशत के करीब है। राजनीति में इससे ठीक विपरीत है। पहले प्रकार के एक दो प्रतिशत दूसरे प्रकार के अस्सी प्रतिशत और तीसरे प्रकार के अठारह प्रतिशत है। यदि अपराधों के आधार पर अध्ययन करें धर्म में अपराधी दशमलव एक प्रतिशत समाज में दो प्रतिशत और राजनोतिक में सोलह प्रतिशत है। धर्म को व्यवसाय समझने वालों का प्रतिशत भी एक हो सकता है जबकी राजनीति का व्यवसाय समझने वालों का प्रतिशत निन्यान्नवे से कम नही। आप सिर्फ शराब मांस व्यभिचार छुडाकर इस परिस्थिति को बदल नही सकते। इसके लिये तो गंभोर और सूक्ष्म प्रयास करने होंगे। अतः आपसे निवेदन है कि इस संबंध में और विचार करें। सतयुग की वापसी के लिये चरित्र निर्माण हमारे अभियान का द्वितीय चरण है। प्रथम चरण तो बेलगाम राजनीति पर कोई न कोई अंकुश लगाने का प्रयास ही है। भारत की बेलगाम राजनीति पर अंकुश के लिये राजनीतिज्ञों के अधिकार दायित्व एवं हस्तक्षेप कम करने होगे। यह कार्य भारतीय संविधान में संशोधनों से ही संभव है जिसके लिय जनमत खडा करना आवश्यक है। ऐसा जनमत खडा करना असंभव तक कठिन कार्य है और यह असंभव दिखने वाला कठिन कार्य पूरा करने का बीडा हम आप सब ने मिलकर उठाया है आइये और मिल जुलकर अन्य सब का काम करते हुए इस कार्य में भी कुछ सक्रिय हों।

12. श्री भगवानलाल वंशीवाल, नाथद्वारा, राजस्थान

पश्न– हमने ग्यारह समस्याओं की पहचान कर ली है। हम इन समस्याओं के संबंध में आम नागरिकों को अवगत और जागरूक भी कर रहें किन्तु इस समस्याओं का समाधान हम कैसे करेंगे इसकी हम कोई योजना स्पष्ट नहीं करते। जब तक ग्यारह समस्याओं के समाधान की योजना प्रस्तुत नहीं होती तब तक कैसे काम बढेगा?

उत्तर– हमने ग्यारह समस्याओ की पहचान कर ली है जिन पर लगातार विचार मंथन जारी है हमन इन ग्यारह समस्याओं के समाधानों पर भी अपनी प्रारंभिक सोच स्थिर कर ली है। इनमें से पांच समस्याएँ चोरी, डकैती, मिलावट, कमतौल, बलात्कार, जालसाजी, धोखा और हिंसा आतंक, शासन की निष्क्रियता के कारण बढो है। शेष समस्याएं भ्रष्टाचार, चरित्र पतन, साम्प्रदायिकता, जातीय कटुता, आर्थिक असमानता और श्रमशोषण शासन की अति सक्रियता के कारण बढो है। इन ग्यारह समस्याओं के समाधान भी बिल्कुल आसान है। भारतीय संविधान में तीन चार संशोधन से इनका मार्ग प्रशस्त हो जायेगा। इस संशोधनों पर ज्ञानयज्ञ मण्डल के माध्यम से लगातार बहस चल रही है। इस बहस का समापन एक डेढ वर्ष बाद जन संविधान सभा के एक माह के गंभीर विचार मंथन के बाद ही अधिकृत रूप से होगा और उसके बाद ही हम अधिकृत घोषणा कर सकेगे। तब तक मैं अपने विचार निरंतर भेज रहा हूँ। रामायण के सात खंड है। लंका कांड सातवां है। हम सातवे कांड की जल्दबाजी न करें। अर्थात लोक स्वराज्य मंच ने सिर्फ एक निष्कर्ष निकालकर काम शुरू किया है कि भारत की व्यवस्था परिवर्तन की सबसे बडो बाधा राजनैतिक उच्चश्रृखला पर लगाम लगाने के लिये भारतीय संविधान में त्रिसूत्रीय संशोधन के लिय जनमत जागरण। इस कार्य के अतिरिक्त लोक स्वराज्य मंच को अभी कुछ काम हाथ में नहीं लेना है। अन्य कार्य अभी सिर्फ वैचारिक स्तर पर है जो ज्ञानयज्ञ मण्डल कर रहा है। आप उस कार्य से भी पृथक से जुड सकते ह किन्तु वह कार्य अभी विचार मंथन तक सीमित है। जन जागरण तक नहीं अतः आपसे निवेदन है कि आप राजनैतिक उच्चश्रृंखला के विरूद्ध जन जागरण तथा ग्यारह समस्याओं के समाधान में वैचारिक विचार मंथन की सीमा में अधिक स अधिक सक्रिय होने का प्रयास करें। सबसे आसान मार्ग है कि आप ज्ञान तत्व के ग्राहकों और पाठकों को अधिकाधिक विस्तार करें जिससे दोनों दिशाओं में एक साथ काम बढ।

नागरिक समाज दिल्ली की सभा में श्री बजरंगलाल

देश में शासन के अधिकार, दायित्व तथा हस्तक्षेप न्यूनतम होने के पक्ष में जनमत जागरण में लगे व्यक्तियों एव संगठना के समूह लोक स्वराज्य मंच के व्यवस्था परिवर्तन विषय पर चिंतन को उस समय बल मिला जब पूर्वी दिल्ली के पटपडगंज क्षेत्र में नवगठित संस्था नागरिक समाज के तत्वाधान में व्यवस्था परिवर्तन क्यों विषय पर एक सभा प्रायोजित की गई। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध विचारक श्री बजरंगलाल एवं भाजपा के पूर्व महासचिव श्री गोविंदाचार्य आमंत्रित किए गए विद्वान वक्ता श्री बजरंगलाल ने मत व्यक्त किया कि एक षडयंत्र के तहत भारतीय संसद को हमारा अभिरक्षक (कस्टोडियन) बना दिया गया है तथा व्यवस्थापक संसद को मालिक के प्राधिकार दे दिए गए है जिससे अनेक समस्यायें उत्पन्न हो गई है। इस स्थिति से तभी मुक्ति मिल सकती है जब हमें भ्रष्ट व निष्क्रिय सांसदों को पांच वर्ष पूर्व ही वापस बुलाने का संवैधानिक प्राधिकार प्राप्त हो।

ज्ञातव्य है कि श्री बजरंगलाल ज्ञानयज्ञ मण्डल के प्राध्यक्ष है तथा यह वही संस्था है जिसके लम्बे समय स चल रहे शोध व निष्कर्षो के अनुसार पर ही लोक स्वराज्य मंच की स्थापना की गई है। प्रसिद्ध गांधीवादी डॉ. आर्यभूषण भारद्वाज इसके प्राध्यक्ष हैं। सभा में श्री भारद्वाज भी उपस्थित थे।

श्री बजरंगलाल ने अपने लगभग पच्चीस मिनट के संक्षिप्त उदबोधन में स्पष्ट किया कि उन्होने 25 दिसम्बर 1984 को राजनीति से सन्यास लेने क पश्चात छत्तीसगढ जिले के रामानुजगंज में ज्ञानयज्ञ मण्डल की शुरूआत की थी। मण्डल ने अपने शोध पूर्ण निष्कर्ष में व्यवस्था परिवर्तन के साथ ही चरित्र परिर्वतन की आवश्यकता प्रतिपादित की। मंडल ने देश में प्रमख ग्यारह समस्याओं की पहचान की तथा उसके निदान के भी उपाय सुझाये। लोक स्वराज्य मंच इसी बुनियादी काम में लगा हुआ है। विद्वान विचारक श्री बजरंगलाल ने आगे कहा कि मंच का प्रयास है कि राजनीति पर समाज का अंकुश हो। बाद में भारत विकास संगम के अध्यक्ष श्री गोविंदाचार्य ने भी व्यवस्था परिवतन पर बल देते हुए स्वदेशी की प्रवधारणा पर व्यापक प्रकाश डाला तथा उपस्थित श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता सामाजिक कार्यकर्ता श्री केशवानंद ने तथा संचालन श्री सुंदर लाल ने आभार माना।

नागरिक समाज दिल्ली की सभा में श्री बजरंगलाल

राजस्थान प्रवास

जडता तोडने का सद् प्रयास

गांधी जी ने कहा था –स्वावलम्बन ही स्वराज्य है। यह वाक्य बारम्बार में हृदय को छूता और विचारों को कुरेदता रहा है। प्रयास यह रहता है कि मैं स्वयं स्वावलम्बन की राह पर निरंतर चलता रहूँ। किशोरावस्था से ही मैं सर्वोदय विचार से जुड गया था और आज जबकि मैं वरिष्ठ नागरिकता की श्रेणी में आने की कगार पर हूँ। तब लोक स्वराज्य मंच के विचारक श्री बजरंगलाल एव अध्यक्ष डॉ. आर्यभूषण भारद्वाज का सानिध्य पाकर लोक स्वराज्य की दिशा में जनमत जागरण हेतु कियाशील हो गया हूँ। हाल ही में नई दिल्ली से मेरा राजस्थान प्रवास इसी श्रृंखला में हुआ।

मई–जून माह राजस्थान में भीषण गर्मी और लू–लपाट के लिए मशहूर है। फिर भी प्रवास पर जाने हेतु मेरे मन म अपार उत्साह और उमंग की लहरे हिलोर मार रहीं थी। नौ मई 2005 की प्रवास की प्रथम रात्रि दिल्ली जयपुर बस में काटने के उपरांत मैंने गुलाबी नगरी की सुबह से तपती सडक पर पैर रखते ही अपने सम्पर्क सूत्र चौधरी अमर सिंह जी से दूरभाष पर सम्पर्क किया तो उनकी बिटिया ने जानकारी दी कि पापा को अचानक मेरठ–गाजियाबाद रिश्तेदार में जाना पडा है और वे पंद्रह तारीख के बाद ही लौट पाऐंगे। निराश होकर मैंने एक अन्य मित्र श्री रामप्रकाश गुप्त के घर की राह पकड़ी। मिलाप नगर स्थित उनके निवास पर पहुचते ही ज्ञात हुआ की उनका हाल ही में हृदयघात से निधन हो गया है। उनक बेटे श्री राकेश गप्त एल.बी.एम कॉलेज ऑफ फार्मेसी में प्राचार्य है। जो घर पर नहीं थे किन्तु उनकी पत्नि ने मुझे अन्दर बुला लिया। इस बीच श्रो रामप्रकाश गुप्त की धर्म पत्नि श्रीमतो प्रेमलता जी बैठक कक्ष में आई ता मैंन श्री गुप्त के निधन पर अपनी ओर से हार्दिक संवेदना जताई। श्री गुप्त राज्य के आर्थिक सांख्यिकी विभाग में उप निदेशक रहे तथा सेवा निवृति के बाद साहित्यिक व सामाजिक कार्यो में सकियता बनाये हुये थे।

यात्रा की ओर अधिक सार्थकता का आभास तब हुआ जब मै श्री अदल सिंह राठौर के मॉडल टाउफन स्थित निवास पर पहुंचा। वे कृषि विभाग में अधिकारी रहे हैं तथा कर्म व स्वभाव से आध्यात्मिक प्रवृतिया में समृद्ध ह। उन्होने लोक स्वराज्य मंच के कार्यक्रमों में भरपूर सकियता दर्शाते हुए यह संकल्प जताया कि वे अमर सिंह जी से मिल कर जयपुर लोक सभा एव विधान सभाई क्षेत्रों में आगामी एक डेढ माह के भीतर मंच की इकाईयों का गठन कर लेंगे।

अगले दिन मैंने अजमेर पहुच कर श्री मोक्षराज शास्त्री से उनके वैशाली नगर के समीपस्थ नव निर्मित आवास गृह जाकर भेंट की तो उन्हाने न केवल अजमेर बल्कि निकटवर्ती चार अन्य लोक सभा क्षेत्रों में भी मंच की इकाईयों के गठन हेतु संकल्प जताया तो मेरी प्रसन्नता का ठिकाना नहों रहा उन्हाने यह

भी कहा कि मैं उपने दस ग्यारह दिवसीय राजस्थान प्रवास के अंतिम चरण के एक बार पुनः आऊँ ताकि स्थानीय नागरिको के साथ बैठक कर कार्यक्रम को परिणिति पर पहुचाया जा सके। रात्रि बिताने के पश्चात अगली सुबह उनके यहां आर्य समाज पद्धति से यज्ञ कार्य संपन्न हुआ जिसमें मुझे भी आहुति देने का अवसर मिला।

प्रवास के आगामी कार्यक्रम को मैंने माक्षराज जी की सलाह से ही अंतिम रूप देते हुए श्रीनाथ द्वारा प्रस्थान किया। वहां लोक स्वराज्य मंच के राष्टोय उपाध्यक्ष एवं राजस्थान प्रभारी श्री भगवान लाल वंशीवाल समीपवर्ती ग्राम बगोल में ही निवास करते है। श्री वंशीवाल ने भी न केवल अपने उदयपुर लोक सभा क्षेत्र एवं विधान सभाई क्षेत्रों में मंच की इकाईयों के गठन हेते सक्रियता प्रदर्शित की बल्कि एक डेढ माह में अन्य कई क्षेत्रों में सांगठनिक कार्य को गति देने विषय पर संकल्प व्यक्त किया। उन्होने कतिपय प्रश्न भी उठाये। यथा–लोगों की समस्यायें अनंत है जिनमें से हमने प्रमुख समस्यायें रेखांकित कर ली हैं किन्तु उनके समाधान हेतु कार्य योजना कहां है? इसके साथ ही उन्होने अम्बिकापुर में वर्ष 2004 में हुए सम्मेलन के निर्णयों का क्रियान्वयन न होने पर असंतोष जताया। मैंने उन्हे जानकारी दी की मंच ने कार्ययोजना के अनुसार देश के 542 लोकसभा क्षेत्रों में से शताधिक लोकसभा क्षेत्रों मे मंच को इकाईयों को गठन होते ही शीघ्र ही नई दिल्ली में तीन दिवसीय प्रतिनिधि सम्मेलन बुलाया जायेगा। जिसमें विषय व्यवस्था परिवर्तन क्यों व कैसे? रहेगा इस बीच ज्ञानयज्ञ मण्डल के अध्यक्ष श्री बजरंगलाल जी अन्य समान धर्मी संगठनों के प्रमुखों से विचार विमर्श कर उन्हें भी मच को आंदोलनकारी व रचनात्मक कार्यो से अधिकाधिक सम्मेलन मे त्रिसूत्रीय संविधान संशोधन हेतु हस्ताक्षर अभियान चलाये जाने विषयक प्रस्ताव का प्रश्न है हमने अपनी और से यह कार्य पूर्ण कर लिये किन्तु सर्वोदय के शीष संगठन सर्व सेवा संध के पदाधिकारियों ने ही जब इन हस्ताक्षरों का उपयोग नहीं किया तो हम क्या करते? हमने संविधान संशोधन हेतु जनमत जागरण का कार्य पूर्वापेक्षा और अधिक दृढता से आगे बढाया है।

श्री वंशीवाल जी से बाद में ज्ञानतत्व पत्रिका का प्रसार प्रचार बढाने एवं अन्य अनुशांगिक विषयों पर भी गहन चर्चा हुई तथा उन्हांने मच के कार्यक्रमों में बढ चढ कर हिस्सा लेने हेतु सहमति व्यक्त की। श्री वंशीवाल जी ने मुझे श्रीनाथ द्वारा के जिन गणमान्य व्यक्तियों से भेंट कराइ उनमें श्री रामदास अग्रवाल भाजपा राज्य सभा के सदस्य है जबकि श्री नरेन्द्र पाल सिंह आजादी के पूर्व मेवाड एसम्बली की सदस्य रहे ह। वे वर्ष 1978 में नगर पालिका के सभापति तथा आपातकाल के बाद हुए विधान सभा चुनाव में विधायक पद पर भी निर्वाचित होकर स्थानीय जन समस्याओं के निराकरण हेतु सचेष्ट रहे। जब हम श्रीनाथ साहित्य संगम के पूर्ण अध्यक्ष श्री सुंदर वर्मा कथित से मिलने उनके निवास पर गये तो उन्हाने लोक स्वराज्य मंच के उद्देश्यों के प्रति संपूर्ण समर्पण भाव प्रदर्शित किया। श्रीनाथ द्वारा के लगभग बीस व्यक्तियों से सारगभित विचार हुआ। हमने ज्ञानयज्ञ मण्डल द्वारा प्रकाशित साहित्य भी भेंट किया ताकि वे कार्यक्रमों से गहरे जुड सकें।

प्रयास के अगले चरण में मैने उदयपुर पहुच कर श्री शांति लाल सुयल से संपर्क किया। उन्होने मच की सदस्यता ग्रहण की तथा चितौडगढ जाने का परामर्श दिया ताकि वहां भी लोक स्वराज्य आंदोलन खडा हो सके। चितौडगढ में श्री बालू राम खटीक ने विधान सभा क्षेत्र में मंच की इकाई के गठन हेतु आश्वस्त किया। बाद में मैंने कोटा प्रस्थान किया। कोटा का केन्द्र बनाते हुए झालावाड बारा छबडा आदि कई प्रमुख क्षेत्रों में लोक स्वराज्य मंच का काम खडा करने हेतु क्रमशः श्री प्रेम नारायण श्रीवास्तव एडवोकेट हाईकोर्ट विष्णु वर्मा एवं डा महेश ने संकल्प लिया।

कोटा से मैं सीधे जोधपुर गया जहां श्री अक्षय गोजा ने लोक स्वराज्य मंच की सदस्यता ग्रहण की। न केवल मारवाड बल्कि देश के लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकारों में उनकी गणना होती है। उनका वैचारिक दृष्टि से मंच से जुडाव निश्चय हो मंच के लिये फलदायी सिद्ध होगा। जोधपुर में श्री गोजा की मदद से अन्य कई जन प्रतिनिधि निकट भविष्य में मंच से जुडेंगे। प्रारंभिक चर्चाओं से यह विश्वास दृढ हुआ है।
जोधपुर से ही मैंने दूरभाष पर यह पुष्टि कर ली कि श्री अमर सिंह चौधरी उत्तर प्रदेश प्रवास से लौट गए है। अतएव मैं जयपुर पहुंचा तथा वहां से उनके साथ अजमेर पहुंच कर श्री मोक्षराज शास्त्री द्वारा आहूत बैठक में भाग लिया। वहां म पिछले प्रवास में ही स्वाधीनता सैनानी एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री मोहन राज भंडारी और वरिष्ठ साहित्यकार एवं हिन्दी सेवी श्री ए.एस.सिंगला से लोक स्वराज्य आंदोलन विषयक चर्चा कर चुका था। ताजा बातचीत के कार्यक्रम को नई दिशा मिली वहा परोपकारी सभा के मंत्री डॉ धर्मवीर से भी कृषि उद्यान में भेंट हुई। वे पहले से लोक स्वराज्य मंच एवं ज्ञानयज्ञ मण्डल के कार्यो से जुड हुए ह। अजमेर से मैं श्री अमर सिंह जी के साथ ही अगले दिन जयपुर लौट आया तथा वहा गहन विचार विमर्श के बाद मैंने वापसी हेतु दिल्ली की राह पकडो।

निष्कर्ष–प्रवास से जहां परस्पर मेल मिलाप बढता है वही कहीं–कहीं व्याप्त जडता भी टूटती है और कार्य को नई दिशा मिलती है। श्री बजरंग लाल जी कहते है कि वर्तमान व्यवस्था शरीफों गरीबों तथा अजनबियों के शोषण के उद्देश्य से अपराधियों पूंजीपतियों तथा बुद्धिजीवियों का योजनाबद्ध षडयंत्र है। यथा स्थिति को तोडने हेतु मेरा प्रवास वास्तव में लोक स्वराज्य हेतु वैचारिक बहस को आगे बढाने का सद्भावनापूर्ण प्रयास भर है।

(लेखक वरिष्ठ समाजकर्मी पत्रकार एवं लोक स्वराज्य मंच के राष्ट्रीय महासचिव ह।)

राजस्थान प्रवास

जड़ता तोड़ने का सद् प्रयास

आमंत्रण पत्र

व्यवस्था परिवर्तन अभियान सम्मेलन दिल्ली

11 से 13 सितम्बर 2005

ज्ञान यज्ञ मंडल ने भारत की वर्तमान समस्याओं के समाधान की दिशा में व्यवस्था परिवर्तन को अपना लक्ष्य घोषित किया है। अब तक इस दिशा मे संस्था के रूप में सर्वसेवा संघ भारत विकास संगम तथा लोक स्वराज्य मंच निरंतर आगे बढ रहें है। ज्ञान यज्ञ मंडल का केन्द्रीय कार्यालय दिल्ली से काम करना आरंभ कर चुका है ठीक दिशा में योजनाबद्ध तरीके से निंरतर प्रगति के प्रयास जारी है।

इस दिशा में गंभीर विचार मंथन करके आगे की कार्य योजना के उद्देश्य से दिल्ली में दिनांक ग्यारह, बारह और तेरह सितम्बर दो हजार पांच रविवार, सोमवार और मंगलवार को व्यवस्था परिवर्तन अभियान सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन की प्रस्तावित रूपरेखा इस प्रकार है––

1. आयोजक – ज्ञान यज्ञ मण्डल
2. अवधि – तीन दिन 11,12,13 सितम्बर
3. नाम – व्यवस्था परिवर्तन अभियान सम्मेलन
4. कार्यक्रम – 11 सितम्बर

   10 बजे उदघाटन

   11 से 2 वर्तमान व्यवस्था का मूल्यांकन तथा व्यवस्था परिवर्तन क्यों विषय पर विचार मंथन,

   3 से 7 व्यवस्था परिर्वतन क्या विषय पर विचार मंथन

   7 से 8 अध्यक्ष द्वारा चयनित दो या तीन वत्काआ के भाषण।

   12 सितम्बर

   8 से 2 नई व्यवस्था के प्रारूप पर संक्षिप्त चर्चा।

   3 से 7 व्यवस्था परिवर्तन कैसे विषय पर विचार मंथन

   7 से 8 अध्यक्ष द्वारा चयनित दो या तीन वत्काओं के भाषण

   13 सितम्बर 8 से 2 व्यवस्था परिवर्तन अभियान की कार्य योजना।

   3 से 5 घोषणाएॅ तथा समापन
5. व्यवस्था – भोजन और निवास निःशुल्क रहेगा।
6. सतर्कता – व्यवस्था परिवर्तन का अर्थ सवैधानिक राजनैतिक व्यवस्था परिवर्तन तक सीमित है। सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन पर चर्चा को विषय

   से बाहर माना जायेगा।
7. मंथन प्रणाली – प्रश्नोत्तर और सुझाव प्रणाली को प्रोत्साहित तथा भाषण प्रणाली निरूत्साहित किया जायेगा। भाषण के लिए भाषण की बिल्कुल अनुमति नहीं होगी।
8. विशेष आमंत्रित – उद्घाटन समापन अध्यक्षता अथवा विशेष भाषण के लिये किसी को विशेष रूप से आंमत्रित नही किया जायेगा। सहभागियों में से ही चयन किया जायेगा।
9. संचालन – मंच संचालन बजरंगलाल का होगा ।

10. अनुशासन— सम्पूर्ण चर्चा में अधिकतम समानता का प्रयास किया जायेगा किन्तु समयाभाव के कारण कठोर अनुशासन का पालन आवश्यक है मंच संचालक की भूलों के लिये लिखकर या सत्र समाप्ति क बाद मौखिक प्रतिवाद किया जा सकता है ऐसे मामलों मे माननीय ठाकुरदास जी बंग आर्यभूषण जी भारद्वाज गोविन्दाचार्यजी रामबहादुर जी राय तथा शरद साधक जी की कमेटी निर्णय करेगी।

प्रत्येक सत्र के प्रत्येक विषय पर मंच संचालक के विस्तृत विचार आप तक शीघ्र ही भजे जायेंगे। अन्य विद्वानों के भी जो विचार उपलब्ध होंगे ये यथाशीघ्र आपको भेजे जायगे जिससे आपको तैयारी करने का प्रयाप्त अवसर मिले। आप भी अपने विचार लिखकर भेज दें तो हम उन्हें अन्य सबसे बीच विचारार्थ प्रसारित कर देंगे।

उक्त सम्मेलन व्यवस्था परिवर्तन के लिये बहुत महत्वपूर्ण होगा। सम्मेलन की समाप्ति पर किसी विशेष कार्यक्रम की घोषणा निश्चित है। आपकी उपस्थिति विचार मंथन की दृष्टि से बहुत उपयोगी होगी। व्यवस्था परिवर्तन के इस कठिन प्रयास में आपकी सहभागिता और उपस्थिति बहुत आवश्यक है। आपसे निवेदन है कि आप उक्त तिथियों पर दिल्ली अवश्य आइये आप अपने साथ इस लक्ष्य के लिये उपयोगी अन्य साथियों को भी ला सकते है। आमंत्रण पत्र की औपचारीकता यहॉ पूरी कर ली जायेगी इस विषय पर गंभीर चर्चा हेतु उचित है कि आप इन विषयों पर अपने पास उपलब्ध साहित्य भी हमें भेजने की कृपा करें।

आशा है कि सम्मेलन में आपकी उपस्थिति अवश्य होगी।

सर्वोदय और संघ आमने सामने

लेखक महावीर

भारत में दो ऐसे संगठन हैं जो पिछले पचास वर्षो से निरंतर चर्चा मे रहे ह। एक है सर्वोदय और दूसरा है राष्टोय स्वयं सेवक संघ। दोनों ही संगठनों में एक से बढकर एक त्यागी तपस्वी लोगों की बहुल्यता है। दोनों ही के लोग निरंतर सक्रिय रहते है। दोनों की ही अपनी विशिष्ट कार्य प्रणाली है।

अनेक समानताओं क बाद भी दोना में काफी असमानताएँ है। संघ एक संगठन का स्वरूप है जिसके नेता निर्णय करते है और कार्यकर्ता तदनुसार आचरण करते है जबकि सर्वोदय का प्रत्येक कार्यकर्ता ही स्वयं में एक नेता है। इसमें न तो एक नेतृत्व है न ही प्रतिबद्ध अनुकरण कर्ता। संघ का एक स्पष्ट लक्ष्य है हिन्दू तुष्टीकरण के माध्यम से भारतीय राजनीति में निर्णायक भूमिका अदा करना। सर्वोदय दिशा हीन है। उसका कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं। भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन तो कभी स्वदेशी का नारा। कभी ग्राम स्वराज्य तो कभी साम्प्रदायिकता उन्मूलन एक वर्ष किये भी इनके लक्ष्य टिकाऊँ या स्पष्ट नहीं होते संघ मुस्लिम संगठनों की क्रिया के विरूद्ध तीव्र योजनाबद्ध तथा परिणाम मूलक प्रतिक्रिया करता है। सर्वोदय संघ की प्रतिक्रिया के विरूद्ध लचर अविचारित तथा शक्ति प्रदर्शन के लिये प्रतिक्रिया करता है। संघ अन्य संगठनों का उपयोग करना जानता है जबकि सर्वोदय किसी संगठन का उपयोग नही कर सकता भले ही उसी का कोई उपयोग कर ले। संघ नेतृत्व सक्रिय तो है किन्तु ढीला ढाला तथा शरीफ प्रवृति का है। संघ का उद्देश्य सत्ता प्रधान है, और परिणाम सफलता है जबकि सवोदय का उद्देश्य जनहित का है किन्तु परिणाम शून्य है।

सर्वोदय का पटना सम्मेलन सम्पन हुआ। मंच पर कुलदीप नैयर, प्रभाषजोशी सहित अनेक बुद्धिजीवी मौजुद थे। तीन दिनों के सम्मेलन में सिर्फ साम्प्रदायिकता ही विचारणीय मुद्दा रहा साम्प्रदायिकता की चर्चा भी गजरात चुनावों पर आकर सिमट गई। तय किया गया कि गुजरात के आगामी चुनावों में सर्वोदय का बिल्कुल सामने आकर भा.ज.पा.को हराना ह। घोषित किया गया कि वर्तमान गुजरात चुनाव में सर्वोदय के अस्तित्व को चुनौती मानकर प्रत्येक गांधीवादी कार्यकर्ता को पूरी शक्ति से लग जाना है सभी वक्ताओं ने एक से बढकर एक घोषणाएँ की। ऐसा लगा कि गुजरात चुनाव एक तरह से सर्वोदय ही लड रहा है चुनाव की तारीख घोषित होते ही सभी कार्यकर्ता को गुजरात जाने का आहवान किया गया संघ की साम्प्रदायिकता की भरपूर आलोचना हुई। किन्तु यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मुस्लिम साम्प्रदायिकता की पूर कार्यक्रम में कोई चर्चा ही नही हुई। कई वक्ताओं ने तो गोधरा अग्नि कांड तथा ग्यारह सितम्बर के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर आक्रमण तक में मुस्लिम कट्टरवाद का बचाव किया तीन दिनों का पूरा सम्मेलन न होकर ऐसे शरीफ भावना प्रधान तथा तीन दिनों का पूरा सम्मेलन देखकर कोई भी तठस्थ प्रेक्षक यह निष्कर्ष निकाल सकता तथा कि उपरोक्त आयोजन धर्म, निरपेक्ष तठस्थ तथा समाधान खोजी विचारकों का सम्मेलन न होकर ऐसे शरीफ भावना प्रधान था दिकभ्रमित किन्तु निष्कर्ष एक पक्षीय थे। उन्हाने कहा कि संघ हिन्दुओं का चर्च बनाना चाहता है। जिसमें कि वह भी हिन्दुओं को उसी तरह मनमानी दिशा में संचालित कर सके जिस तरह चर्च। उन्हाने यह भो कहा कि संघ हिन्दुओं का तालिबानी करण करना चाहता है जो कि हिन्दुओं के लिए घातक है श्री प्रभात जी की दोनो ही बातें अक्षरश सत्य है। संघ के ये प्रयास हिन्दओं के लिये

घातक है। किन्तु ईसाइयों की चर्च प्रणाली और मुसलमानों की तालिबानी कट्टरवाद समाज के लिये घातक है यह बात वे नहीं कह सके सर्वोदय के उस मंच से हिन्दुत्व की मूल अवधारणा को इसाइयों की चर्च प्रणाली तथा मुसलमानों की तालिबान प्रणाली से होने वाले खतरों के प्रति समझते हुए भी चुप रहना उचित समझा गया ऐसा महसूस हुआ कि राष्टोय स्वयं सेवा संघ भारतीय जनता पार्टी की ही एक सामाजिक शाखा की तरह काम करती है तथा सर्वोदय कांग्रेस की सामाजिक शाखा की तरह है। सर्वोदय की प्रत्येक चर्चा में गांधो हत्या की प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है सर्वोदय गांधी हत्या के लिए ता संघ को अक्षम्य दोषी मानता है किन्तु भारत विभाजन में मुसलमानों की भूमिका अथवा सम्पूर्ण विश्व में अन्य धर्मावलम्बियों से निरंतर टकराव में मुसलमानों की भूमिका को भूल जाने योग्य दोष से अधिक नहीं मानता।

मेरे विचार में सर्वोदय घट रहा है। सन् पचहतर में सर्वोदय ने इंदिरा गांधी की तानाशाही के विरूद्ध एक निर्णायक पहल की। किन्तु सर्वोदय से भूल हुई की उसने उक्त पहल करने में संघ तथा साम्यवादियों का मिलाकर एक मंच बना दिया। संघ और साम्यवादी उतने ही कट्टर होते ह जितने कि मुसलमान ये व्यक्ति के रूप में तो कही भी रह सकते ह किन्तु दल के रूप में ये पूरी तरह सतर्क और सक्रिय रहते है। सर्वोदय ने तानाशाही के विरूद्ध ऐतिहासिक संघर्ष का नेतृत्व किया किन्तु देश में कोई निर्णायक परिर्वतन नहीं आ सका। अब पुनः सर्वोदय गुजरात में वही भूल दुहराने जा रहा है। गुजरात में भा.ज.पा. को हराकर कांग्रेस को सत्ता दिलाने से सवोदय की अपनी शक्ति का प्रदर्शन तो संभव है किन्तु समाज को कोई लाभ नहों होगा। संघ को साथ लेकर सर्वोदय ने कांग्रेस को सबक सिखाया था और अब कांग्रेस को साथ लेकर भा.ज.पा.को सबक सिखना किसी दृष्टि से समाज की समस्याओं के समाधान में ठोस पहल नहीं है। सर्वोदय को इससे बचना चाहिए।

वर्तमान समय में भारत ग्यारह ऐसी समस्योां से जूझ रहा है जिनके समाधान की दिशा में न भा.ज.पा.ही गम्भीर है न ही कांग्रेस ये है :– 1. चोरी, डकैती, लूट 2. बलात्कार 3. आतंकवाद 4. धोखा 5. मिलावट, कमतौल 6. आर्थिक असमानता 7. श्रम शोषण
8. चरित्र पतन 9. भ्रष्टाचार 10.साम्प्रदायिकता 11. जातीय संघष। ये सभी समस्याएँ निरंतर चिन्ताजनक रूप से बढ रही है। सर्वोदय का कर्तव्य है कि वह इन सभी समस्याओं पर गम्भीर मंथन कर। सन पचहतर का जयप्रकाश आंदोलन भ्रष्टाचार के विरूद्ध कान्ति का प्रयास था पचहतर की कान्ति सफल होकर भी भ्रष्टाचार पर कोई निर्णायक रोक नही लगा सकी और वर्तमान गुजरात आंदोलन यदि सफल भी हो जाये तो साम्प्रदायिकता पर कोई रोक नहीं लगेगी भले ही साम्प्रदायिक संघर्षों में शामिल एक पक्ष संघ कमजोर हो जावे। एक दूसरे पर अन्याय करने के उद्देश्य से संघर्ष कर रहे मुस्लिम और संघ परिवार में से किसी एक न ही समस्या का समाधान शान्ति के उद्देश्य से अन्याय को प्रोत्साहन किसी दृष्टि स उचित नहीं है। गुजरात में सर्वोदय के प्रयास कुछ इसी तरह की भूल माने जाने चाहिए।

उपर लिखी ग्यारह समस्याओं पर गम्भीरता से चिन्तन मनन करें तो ये सभी एक दूसरे से जुडो हुई है। इन सबका सामूहिक समाधान के साथ साथ इनके अलग अलग समाधान भी करने होगे किन्तु सभी समस्याओं पर एक साथ काम शुरू करना होगा। संघ सिर्फ एक समस्या के समाधान में लगा हुआ है और सर्वादय ढुलमुल नीति पर चलता रहता है। संघ और सर्वोदय यदि मिलकर इस ग्यारह समस्याओं के समाधान मे लग जावें तो एक वर्ष ही पर्याप्त है। किन्तु इसक लिये संघ को अपनी नीयत ठीक करनी होगी और सर्वोदय को अपनी नीतियाँ बदलनी पडेगी अर्थात संघ को अपनी चालाकी कम करनी होगी और सर्वोदय को चालाकी बढानी होगी। यदि संघ अपने लक्ष्य में संशोधन न भी करना चाहे तो सर्वोदय को अपने शराफत को समझदारी म बदलना होगा। यदि अब भी सर्वोदय ने अपनी नीतियों में आमूल चूल परिवर्तन नहीं किया तो सर्वोदय समाज की समस्याओं के समाधान में कोई निर्णायक भूमिका निभा सकेगा, इसमें मुझे पूरा संदेह है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न–श्री भरत गाँधी, मेरठ

ज्ञान तत्व कमांक संतावन में लिखे मुक्तानन्द जी के विचारों पर अजमेर के पूर्व वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्री एम.एस.सिंगला जी ने अपनी प्रतिक्रिया मेरे पास भेजी है। मैंने उसे ध्यान से पढा है। श्री सिंगला जी ने मुक्तानन्द जी के सभी सुझावों का अस्वीकार किया है किन्तु उनके तर्को में दम नही है। श्री सिंगला जी ने पहले उत्तर में लिखा है कि पचास वर्षो में भारत को क्या मिला? सिर्फ आश्वासन ही मिले है। मेरे विचार में श्री सिंगला जी का सोचना गलत है। पचास वर्ष में भारत को काफी कुछ मिला है। भले ही वह आशा से कम है या अपर्याप्त है।
श्री सिगला जी ने इस आधार पर आयकर पर आयकर समाप्त करने की सिफारिस को है कि इससे पूँजीपतियों का परमार्थ भाव भी जग सकता है और भोग विलास भाव भी। यह अन्तर करना आसान नही कि किसका कौन सा भाव जगेगा। श्रीसिंगला जी का विचार पूरी तरह पूँजीवाद पर आधारित है।

श्री सिंगला जी ने आवश्यकता की न्यूनतम सीमा उपभोग की अधिकतम सीमा घोषित करने की मुक्तानन्द जी की मांग का मजाक उडाते हुए लिखा है भारत जैसे उच्च आध्यात्म प्रधान देश में अनावश्यक भी है और असंभव भी। मेरे विचार में संतो की सादगी के प्रवचनों का भोली भाली गरीब और निरीह जनता पर तो असर होता है किन्तु पांच लाख का पण्डाल लगाने वाले पूँजीपति पर कोई असर नहीं होता यदि भारत में आध्यात्मिक नियंत्रण है तो फिर कानूनी नियंत्रण के घबराहट क्यों? जो स्वतः नियंत्रित है उन पर कानून कुछ नहीं करता है। कानून तो सिर्फ उनके लिये है जो ऐसी सीमा को नही मानते। अन्त में श्री सिंगला जी ने श्री मुक्तानन्द जी के सम्पूर्ण कथन को साम्यवादी विचारों से प्रभावित मानते हुए लिखा है कि कानूनों की अधिकता के दुष्परिणाम भारत निरंतर भुगत रहा है। कानूनों की अधिकता ने अनैतिकता को प्रोत्साहन दिया है और अनैतिकता में वृद्धि बहुत घातक है। जब तक शासन साफ सुथरा नहीं होगा। तब तक प्रशासन भी साफ सुथरा नहीं होगा।
कानूनों से हर बात का सुधार करने के प्रयत्न या तो राजनैतिक पकड मजबूत करने के लिये होते है या आत्मश्लाघा के लिये। इससे परिणाम श्न्य होते है मेरे विचार में कानूनों की अधिकता यदि घातक ह तो कानूनों का अभाव भी कम घातक नहीं। आवश्यक नही कि सिर्फ समाज के कानूनों का अभाव भी कम घातक नहीं आवश्यक नहीं कि सिर्फ समाज के कानून ही एकमात्र हल हो और शासकीय कानूनों का कोई उपयोग न हो। अतः इस मुद्दे पर गहराई से विचार करने की आवश्यकता है।
उत्तर— मुक्तानन्द के विचारों पर श्री सिंगला जी के विचार और भगत जी के उत्तर विचार योग्य विषय बन गये ह। अतः गम्भीर चिन्तन की आवश्यकता है।
दुनियां में आमलोगों पर अपना शिकंजा मजबूत रखने के प्रकार की विचार धाराएँ वर्तमान हैं पहली साम्यवादी दूसरी पूँजीवादी साम्यवादी विचारधारा धन को सभी समस्याओं का एक मात्र कारण घोषित करती है तथा सत्ता के सहारे प्रत्येक नागरिक को गुलाम बनाकर रखना चाहिए दोनों ही विचारधाराओं का उद्देश्य आम लोगों को गुलाम बनाकर रखना चाहिए शोषण दोनों का मुख्य लक्ष्य है साम्यवादी विचार धारा का मुख्य केन्द्र रूस चीन रहा आर पूँजीवाद विचारधारा का अमेरिका और बिटेन। एक तीसरी विचारधारा अब तक न तो कहीं स्थापित हो सकी है न ही कही प्रयोग हुआ है। अतः घुम फिरकर इन दोनों के ही बीच टकराव चलता रहता है साम्यवादी विचारधारा के पास आकर्षक नारे पूँजीवाद की अपेक्षा अधिक है किन्तु कुल मिलाकर साम्यवाद प्जीवाद की अपेक्षा अधिक घातक है पूँजीवाद भी घातक तो है किन्तु पूँजीवाद का इलाज अब तक नहीं हो पाने से परिणाम अन्ततः साम्यवाद या समाजवाद की ओर ही ले जाता है। धन के केन्द्रीयकरण से श्रम शोषण होता है यह सही है किन्तु सत्ता का केन्द्रीयकरण तो अत्याचार की सीमा तक बढ जाता है जो शोषण की अपेक्षा कई गुना अधिक घातक है। सन नब्बे से पूर्व का भारत साम्यवाद की तरफ झुका हुआ था और नब्बे के बाद का पूँजीवाद की तरफ। नब्बे के पूर्व के वामपंथी पूँजीवाद का विकल्प समाजवाद या साम्यवाद को बताया करते थे। अब साम्यवाद के असफल सिद्ध हो जाने के बाद वे सब पूँजीवाद के विरूद्ध प्रचार करने तक सीमित है। विकल्प नही बता पाते। सर्वोदय ग्राम स्वराज्य के माध्यम से पूजीवाद का एक दूसरा विकल्प देने हेतु छटपटा भी रहा है तथा क्षमता भी रखता है किन्तु सर्वोदय भी आर्थिक शोषण से मुक्ति के नारों में उलझकर कभी अन्त्योदय तो कभी स्वदेशी में भटक जाता है और मूल ग्राम स्वराज्य को भ्रमित कर देता है।

श्री सिंघला जी ने जो कुछ भी लिखा है वह साम्यवाद क दोष है तथा श्री मुक्तानन्द जी या भरत गांधी ने पूँजीवाद के दोष गिनाये है श्री सिंघला जी ने कानूनों की अधिकता को मूल्य कारण माना है तथा आर्थिक असमानता को सत्ता की समानता से कम घातक माना है मुक्तानन्द जी तथा भरत गांधी जी ने कानूनों के प्रयोग को एक आवश्यक उपाय स्वीकार किया है सिगला जी के आयकर हटाने के तर्क के उत्तर में भरतजी ने लिखा है कि धनवान व्यक्ति का परामार्थ भाव ही जगेगा यह आवश्यक नहीं हो सकता की उसका भोग भाव विकसित हो जाये। मै भरत जी के इस तर्क से सहमत हूँ किन्तु उनसे एक प्रश्न पछना चाहता हूँ कि कानून की शक्ति से न्याय मजबूत होगा यह आपने कैसे मान लिया हो सकता है कि कानून की शक्ति पाकर सत्ताधारी मदान्ध हो जाये ओर उसका दुरूपयोग करने लगे यदि धन का एकत्रीकरण अच्छे या बुरे दोनों परिणाम दे सकता है तो सत्ता का एकत्रीकरण भी तो उसी तरह दोधारी तलवार है। पचास वर्षो का इतिहास बताता है कि भारत में सत्ता ने अधिकाधिक अन्याय अत्याचार आर शोषण किया है। एकत्रित धन को अपेक्षा कई गुना अधिक। अतः आर्थिक विषमता के विरूद्ध आपके सोच में सत्ता के केन्द्रीयकरण का ही मार्ग छिपा है तो विनम्रतापूर्वक मैं इसे स्वीकार करता हूँ। यदि सत्ता के विकेन्दोयकरण के साथ साथ आर्थिक विषमता दूर करने का कोई मार्ग समझा सकें तो मैं आपसे सहयोग कर सकूंगा। सम्पूर्ण चर्चा में मैं श्री सिधल जी का अपनी सोच से अधिक निकट पाता हूँ। मैं पूँजीवाद का कतई समर्थक नहीं। मैने आर्थिक असमानता को दूर करने के उद्देश्य से व्यक्तिगत पारिवारिक अथवा संस्था गत सम्पूर्ण सम्पति पर दो प्रतिशत वाषिक तथा कृत्रिम उर्जा का वर्तमान मूल्य बढाकर दो से ढाई गुना करने का प्रस्ताव किया है। मेरे प्रस्ताव अनुसार शासकीय हस्तक्षेप भी कम होगा और उपभोग की अधिकतम सीमा स्वाभाविक तौर पर निर्मित हो जावेगी। श्रम मूल्य अपने आप बढ जावेगा। श्रम की मांग भी बढ़ेगी और उपयोगी भीं। पता नहीं आप लोग क्यों सभी प्राकृतिक एवं स्वाभाविक उपायों से सामाधान नहीं खोज कर सिर्फ कानून और सत्ता के सहारे आर्थिक न्याय की सोचते है। मैं अपनी बात पुनः स्पष्ट कर दूँ कि मैं सत्ता के विकेन्द्रीयकरण के साथ साथ आर्थिक न्याय का पक्षधर हूँ। अतः मैने अपना पक्ष आपके पास रखना उचित समझा।

लोक स्वराज्य मंच ने भारत की कुछ प्रमुख समस्याओं को ग्यारह के रूप में पंजीकृत किया है इसमें चोरी, डकैती, मिलावट, कमतौल, बलात्कार, आतंक, दादागिरी, धूर्तता जालसाजी आदि को मिलाकर पांच अपराध शामिल है। साथ ही आर्थिक असमानता, श्रम शोषण साम्प्रदायिकता भ्रष्टाचार जातीय टकराव जैसी पांच कृत्रिम समस्याएँ भी शामिल है तथा चरित्र पतन को ग्यारहवीं समस्या के रूप में चिन्हित किया गया है नई व्यवस्था में इन ग्यारह समस्याओं का एकमुश्त समाधान खोजना होगा। मुक्तानन्द जी तथा आर्थिक असमानता पर विशेष तथा भ्रष्टाचार पर आंशिक प्रभाव पड सकता है इन दो समस्याओं के समाधान से अन्य समस्याओं का कोई संबंध नहीं है। इसके विपरीत सत्ता के केन्द्रीयकरण का खतरा और आर्थिक बढ जायगा। यदि लोक स्वराज्य प्रणाली क अनुसार सत्ता का विकेन्द्रीयकरण इस तरह होता है कि शासन के दो भाग कर दिये जावें 1.केन्द्रोय 2.विकन्द्रोय। केन्द्रित शासन के पास अपराध नियंत्रण के सिर्फ पांच दायित्व रहेंगे। अन्य समस्याओं के समाधान का दायित्व विकेन्द्रित शासन के पास रहेगा। केन्द्रित शासन को सरकार तथा विकेन्द्रित शासन का स्थानीय व्यवस्था का नाम देंगे। सत्ता के विकेन्दोयकरण के शासन को पांच समस्याओं के समाधान में बहुत सुविधा रहेगी अन्य 6 समस्याएँ स्थानीय संस्थायें आसानी से हल कर लेगी आथिक असमानता तथा श्रम शोषण के समाधान में स्थानीय संस्थाओं की प्रत्यक्ष तथा केन्दोय शासन की अप्रत्यक्ष भूमिका होगी। केन्द्र सरकार इसमें सम्पति कर तथा कत्रिम ऊर्जा मूल्य वृद्धि से सहायता करेगी। मेरा आपसे निवेदन है कि आप सिगला जी के इस सुझाव पर ध्यान दें की अब तक साम्यवादी नारों से न कुछ हुआ है न ही होगा सिर्फ आकर्षक नारे सत्ता के निकट पहचाने का आधार बन सकते है किन्तु समस्याओं के समाधान के नहीं।

श्री आयुष्मान सिंह, आजमगढ उत्तरप्रदेश

प्रश्न– मैंने आपकी बहुचर्चित पुस्तक अपराध और नियंत्रण को ध्यान से पढा। आपने अपराध की परिभाषा में व्यक्ति के मूल अधिकार हनन को मुख्य माना है क्या शोषण अपराध नही है जो आपने उसे अपराध से अलग रखा है।

उत्तर– शोषण शब्द की परिभाषा मेरे विचार में यह है किसी मजबूर व्यक्ति द्वारा किसी कमजोर की मजबूरी का लाभ उठाना या उठाने का प्रयास करना यदि किसी कमजोर द्वारा मजबूर से एक सा लाभ लिया जाता है तो वह शोषण नही माना जाता। शोषण चार प्रकार का होता है 1.बुद्धिजोवियों द्वारा श्रम जीवियों का शोषण 2.राजनैतिक शक्ति प्राप्त व्यक्तियों द्वारा सामान्य नागरिकों का शोषण 3.धनवानों द्वारा धनहीनों का शोषण 4. धूर्तो द्वारा शरीफों का शोषण। वर्तमान समय में चारों प्रकार के शोषण समाज में अस्तित्व में है। शोषण के रोकने के दो ही मार्ग है। 1. समाज द्वारा 2. कानून द्वारा समाज का अस्तित्व ही नही होने से उसका कोई प्रभाव नहीं है। कानून स्वयं में शोषण के माध्यम बने हुए हाने से कोई प्रभाव नहीं है कानून स्वयं में शोषण के माध्यम बने हुए होने से एक शोषण कम होकर दूसरा शोषण बढ जाता है वर्तमान समय में अनेक ऐसे कानून हैं जो शोषण रोकने के नाम पर बनने क बाद भी शोषण के आधार बने हुए ह। न्यूनतम मजदूरी के कानून श्रम शोषण पर नियंत्रण हेतु बनाये गये थे किन्तु ये कानून ही स्वयं में शोषण बडे माध्यम बने हुए है।

शोषण स्वयं में काई अपराध नहीं है बल्कि अनैतिक है। हम शोषण को असामाजिक कार्य कह सकते ह किन्तु समाज विराधी नहीं शोषण करना अच्छा कार्य नहीं है। किन्तु इसे शासकीय कानूनों से रोकने का प्रयास घातक है क्याकि शोषण बहुत व्यापक अर्थ रखना है तथा किसो व्यक्ति के मूल अधिकार पर कोई आक्रमण या कटौती नहीं करता। किसी जंगल में प्यास से तडप रहे एक राजा को एक गिलास पानी के बदल उसकी आधा राज्य मांगने वाली बुढिया तथा एक गरीब महिला को ऐसे ही प्यास से तडपने की परिस्थिति में किसी सम्पन व्यक्ति द्वारा उसके जमीन लिखवाकर पानी देने में दोना उदाहरण लगभग एक समान होते हुए भी पहला शोषण नहीं है और दूसरा है दूसरा उदाहरण शोषण होते हुए भी अपराध नहीं है भले ही हम उसे अमानवीय कह सकते ह।

आज भारत में शोषण के विरूद्ध बहुत योजनाएं बनाइ जाती है शोषण वास्तव में एक हथियार बना हुआ है शोषण करने का। शोषण शब्द का सर्वाधिक प्रयोग साम्यवादी अथवा समाजवादी किया करते है किन्तु उनकी व्यवस्था में आर्थिक शोषण का स्थान राजनैतिक शोषण या अपराध ले लिया करता है भारत में बुद्धिजीविया द्वारा श्रम का जैसा शोषण हो रहा है। उसमें शोषण शब्द का महत्वपूर्ण स्थान है। छत्तीसगढ के श्रमिक वर्षाकाल के बाद छत्तीसगढ के बाहर रोजगार के लिये पलायन किया करते ह। इस पलायन से छत्तीसगढ के बाहर रोजगार के लिये पलायन किया करते ह इस पलायन से छत्तीसगढ के श्रम खरीदने वालों को कष्ट होता था क्योंकि श्रम अभाव तथा मूल्य बढ जाता था। इन श्रमिकों का पलायन रोकने का कानून उनका शोषण रोकने के नाम पर ही बनाया गया। आज वे मजदूर या तो अधिकारियों को पैसा देकर पलायन कर रहे हैं अथवा यही रहकर औने पौने मूल्य पर अपना श्रम बेचने के लिये मजबूर ह। ऐसे सैकडों कानून बने ह जो शोषण रोकने के नाम पर शोषण करने के लिये बनाये गये है।

एक दूसरा उदाहरण और देंखे। श्रम शोषण रोकने का एक ही मार्ग है श्रम प्रधान रोजगार के अवसर पैदा करना। हमारी सरकार रोजगार के अवसर उत्पन्न करने के स्थान पर शिक्षित बेरोजगारी दूर करने में लगी है रोजगार देने के प्रयास स्वयं में रोजगार के अवसर घटाते है तथा शिक्षित बेरोजगारो दूर करना तो स्वयं में ही श्रम के विरूद्ध बुद्धिजीवियों का षडयंत्र है। इस तरह मुझे यह स्पष्ट दिखता है कि भारत में यदि शोषण को काबू में करना है तो शोषण रोकने क सारे शासकीय प्रयास बन्द कर देने चाहिए यदि कोई व्यक्ति शोषण करता है तो गांव के लोग उसका उपाय खोजेंगे। सरकार नही।

शोषण अपराध है कि नही यह बिल्कुल विवादस्पद नही है। कोई व्यक्ति यदि किसो का कोई काम अस्वीकार कर सकता है। यह और वह अपराध नहीं है तो वही काम उस व्यक्ति से किसी सहमत समझौते के आधार पर करना क्यों अपराध हो सकता है यह समझौता भले ही कितना ही अमानवीय क्यों न हा जैसे किसी आदमी से एक दिन पूरा काम कराकर पच्चीस रूपये देना यदि अपराध है तो उस व्यक्ति को पच्चीस रूपये में भी काम न देने वाला उससे भी बडा अपराधी है। जो समाज न्यूनतम श्रम मूल्य घोषित करता है उसका यह दायित्व भी है कि वह उक्त श्रम मूल्य पर काम देता है इस तरह कम मजदूरी देना शोषण हो सकता है किन्तु अपराध नही। मेरे विचार में ऐसा कोई भी शोषण है तो वह शोषण न होकर सीधा सीधा अपराध ही है

ज्ञान तत्व पाक्षिक दिनाँक 1 जुलाई से 15 जुलाई (1)

———————————————————————————————

प्रश्नोत्तर

1. श्री ओमप्रकाश कश्यप,

प्रश्न– ज्ञान तत्व अंक तिहत्तर प्राप्त हुआ। इस अंक ने अन्य अंकों की अपेक्षा कुछ अधिक ही प्रभावित किया है। आपकी संघर्ष क्षमता के साथ–साथ वैचारिक शक्ति भी विलक्षण है। इससे निराशा के घने बादलों में आशा की कुछ किरण दिख रही है। हम आपके इस प्रयत्न में क्या सहयोग कर सकते है? आगे की योजना क्या है?

उत्तर– ज्ञानतत्व कई वर्षो से निकल रहा है। इसकी गणना भारत के गिने चुने वैचारिक पाक्षिकों में होने लगी है। यद्यपि इसके पाठकों की संख्या अब भी करीब पंद्रह सौ ही है किन्तु गुणवत्ता की दृष्टि से पाठकों में बहुत परिवर्तन हुआ है। पाठकों की गुणवत्ता के आधार पर ही ज्ञानतत्व की गुणवत्ता का भी विकास स्वाभाविक ही है। अतः हम यदि क्रमशः अधिक गंभीर सामग्री आप सबको दे पा रहे है। तो इसका सारा श्रेय आप जैसे पाठको का ही है।

ज्ञान तत्व के माध्यम से आप सबसे विचार मंथन के साथ तीस जनवरी से देश के हिन्दी भाषा कुछ प्रदेशों की वाहन यात्रा भी की गई। यात्रा से प्रत्यक्ष संवाद तथा विचार मंथन को गति मिली। अधिकांश स्थानों पर मीडिया ने भरपूर सहयोग किया। इस यात्रा से काफी लाभ हुआ किन्तु इस यात्रा के बाद एक बात समझ में आई कि बिना योजना के अकेले के प्रयास से परिणाम प्राप्त नही हो सकता। हमें मिलजुलकर टीम भावना विकसित करनी चाहिये।

देश भर के बहुत लोग हमारे इस अभियान से जुडना चाहते हैं किन्तु अब तक हम लोग साथियों से ठीक संवाद नही कर पा रहे थे। इस संबंध में पहली बार एक विचार बना है। जो सूची हम आप सब पाठकों तक भेज रहे है। वह वैसा ही प्रयास है जैसा भगवान राम ने समुद्र बनाते समय अपने वानर कार्यकर्ताओं से पूछकर किया था कि आप अपनी क्षमता अनुसार क्या कर सकते है। नल नील, हनुमान छोटे बन्दर और गिलहरी का अपना अपना स्वयं का आकलन और तदनुसार कार्य था। हम इस ड्राफट के माध्यम से कुछ बिन्दु दे रहें है। आप सुझाव दें कि इसमें क्या क्या कर सकते ह? आपके उत्तरों के बाद अन्य साथियों के पास भी सूची जायगी। इस सूची में प्रत्येक कार्य के साथ उसके मूल्यांकन के लिये अंक तालिका भी दी गई। आप कार्य के महत्व का तुलनात्मक विवेचना करके अंक तालिका के संबंध में भी अपनी सलाह देने का कष्ट करें।

कमांक	**कार्य**	**अंक**
———	———	———
	फार्म भरवाना	
	(क) आपके गांव वार्ड या मुहल्ला से दस ऐसा नाम पत्ते भरकर भेजना जो राजनीति पर समाज के अंकुश की योजना से सहमत हो।	–2
	(ख) अपने विधान सभा क्षेत्र से दस ऐसे नाम पत्ते भरकर भेजना जो अपने गांव, वार्ड या मुहल्ला के दस नाम पत्ते भरवाकर भेजने हेतु सहमत हों।	–4

(ग) अपने लोक सभा क्षेत्र से दस ऐसे नाम पत्ते भरकर भेजना जो
ऐसे दस अन्य पत्ते भेज सकें जो इस क्रम को गाँव
तक पहुँचा सकें । —6

मीटिंग कराना

(1) अपने क्षेत्र में लोक स्वराज्य मंच की एक मीटिंग या आम सभा
का आयोजन करना या कराना (किसी भी अन्य संस्था से) जिसमें न्यूनतम उपस्थिति पचास से अधिक की संभावित हो।
—20 —20

(ख) कोई ऐसी बैठक की व्यवस्था करना जिसमें उस लोकसभा के भिन्न
क्षेत्रों से बीस लोग आ सकते हों तथा जिसमें कार्यक्रम विस्तार की योजना बन सकें।
—20

(ग) कोई ऐसी बैठक जिसमें पांच लोक सभा क्षेत्रों के बीस कार्यकर्ता भाग ले सकें तथा जिसमें कार्यक्रम विस्तार की योजना बन सकें —20

मीटिंगों में भाग लेना

(क) किसी ऐसी बैठक मे वर्ष में एक बार सम्मिलित होना जो अधिकतम एक हजार कि.मी. की हो।
—12

(ख) किसी ऐसी बैठक में वर्ष में एक बार सम्मिलित होना जो आपने पांच लोक सभा क्षेत्रों के अन्दर हों।
—4

(ग) किसी ऐसी बैठक में वर्ष में एक बार सम्मिलित होना जो अपनी
लोक सभा के अन्दर हो। —2

ज्ञान तत्व

पूरे भारत में कही से भी ज्ञान तत्व के दस वार्षिक ग्राहक बनाना।
वार्षिक शुल्क पचास रूपया। —10

ज्ञानयज्ञ

(क) ज्ञान यज्ञ मण्डल के लिये एक संरक्षक सदस्य बनाना संरक्षक सदस्य एक
वर्ष की सदस्यता हेतु एक हजार रूपया की सहायता करता है। इस संग्रह से ज्ञान यज्ञ मण्डल तथा लोक स्वराज्य मंच के केन्द्रीय कार्यालय व्यय की व्यवस्था होगी। —15

,(ख) अपने क्षेत्र में दो से लेकर तीन दिन तक का ज्ञान यज्ञ आयोजन।
इसमें आधे घंटे के यज्ञ पश्चात निश्चित विषयों पर तीन तीन घंटों का स्वतंत्र विचार मंथन होगा।
—20

साहित्य विक्रय

(क) स्वयं या किसी के माध्यम से वर्ष में एक हजार रूपये का साहित्य
बिक्री कराना (कमीशन शून्य)। —20

(ख) स्वयं या किसी के माध्यम से वर्ष में एक हजार रूपये का साहित्य बिकी कराना (कमीशन 30 प्रतिशत)।
—10

पोस्टर कैलेन्डर नारा लेखन

(क) अपनी लोक सभा क अन्तर्गत भिन्न भिन्न क्षेत्रों में पच्चीस पोस्टर खरीदकर लगवाना (मूल्य प्रत्येक दो रूपया)। —4

(ख) अपने शहर या गाँव में पंद्रह पोस्टर खरीदकर लगवाना। —2

(ग) दस कैलेन्डर खरीदकर बिकवाना या बंटवाना (मूल्य प्रत्येक पांच रूपया)। —3

(घ) अपने क्षेत्र में दस नारे लिखना या लिखवाना। —3

(च) लोक सभा के भिन्न भिन्न विधान सभाओं में दस नारे लिखना या लिखवाना। —5

मीडिया प्रबंधन

(क) अपने क्षेत्र में लोक स्वराज्य मंच की पत्रकार वार्ता। —10

(ख) किसी टी.वी. चैनल पर कोई साक्षात्कार प्रसारित कराने की व्यवस्था जो राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित होता हों। —25

ज्ञान यज्ञ मण्डल

अपनी लोक सभा में से ज्ञान यज्ञ मण्डल के विचार मंथन के लिये एक ऐसा नाम प्रस्तावित करना जो—

(क) समाज को यथार्थवादी माना जाता हो।

(ख) धूर्त, अपराधी, स्वार्थी, मूर्ख की छवि न हो।

(ग) विचार प्रधान हो।

(घ) तटस्थ व्यक्ति माना जाता हो। —15